हिन्दी दैनिक

जौनपुर, लखनऊ व भदोहीं से प्रकाशित

देश की उपासना

www.Deshkiupasana.com
www.Deshkiupasana.in
www.Deshkiupasana.org

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

dku live &
dkunews24

वर्ष : 04 अंक–118 : जौनपुर, शनिवार 25 जून 2022 सान्ध्य दैनिक (संस्करण) पेज –4 मूल्य : 2 रूपया

मुख्यमंत्री योगी का आह्वान : बोले– वैज्ञानिक शोध पत्र लिखें और पेटेंट कराएं

लखनऊ ब्यूरो : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया है कि वह जिस क्षेत्र में हैं वहां अधिक से अधिक शोध पत्र लिखें। नए शोध कार्यों और अनुभवों को सामने लाएं। नए शोधार्थियों को उनके बारे में बताएं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नल में शोध पत्रों का प्रकाशन कराएं। शोध कार्यों का पेटेंट कराएं। इससे हम आगे बढ़ेंगे। मुख्यमंत्री शनिवार को एकेटीयू में शुरू हुए दो दिवसीय विज्ञान भारती के राष्ट्रीय अधिवेशन के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कोई भी नया ज्ञान विज्ञान है। ज्ञान जहां से भी आए उसे ग्रहण करना चाहिए। यही वैज्ञानिक दृष्टि है। हमारे यहां मंत्रों में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण झलकता है। कहा गया है कि कोई वस्तु नष्ट नहीं होती पूर्णता बनी रहती है। हम सरकारी काम भले ही अंग्रेजी में करते हैं लेकिन घर के कार्यक्रम भारतीय पद्धति से करते हैं। अंग्रेजी में वैज्ञानिक दृष्टि नहीं है। उन्होंने कहा कि कौन मुहूर्त कब होगा, यह हमें भारतीय पद्धति से ही स्पष्ट पता चलता है। सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण, पूर्णिमा और अमावस्या कब होगी? इसकी सही जानकारी भारतीय पंचांग से ही मिलती है। मनुष्य में ही संवेदना नहीं होती बल्कि हर एक जंतु में संवेदना होती है। यह दृष्टि

दुनिया को हमारे वैज्ञानिकों ने दी। हमारे दर्शन में हजारों साल पहले गीता ज्ञान में बता दिया गया कि आत्मा अमर है। आज किसी भी कार्य को वैज्ञानिक दृष्टि से देखने की आदत खत्म हो रही है, इसे सुधारना होगा। हमारी प्रतिदिन की घटनाएं हमें वैज्ञानिक सोच के प्रति जागरूक करती हैं। इसलिए हमें एक ढर्रे पर चलने की बजाए कुछ नया करना होगा। उन्होंने कह कि नई शिक्षा नीति इस क्षेत्र में आने वाले समय में सहायक होगी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने स्वतंत्रता आंदोलन एवं विज्ञान विषयक पुस्तक के हिंदी व मराठी संस्करण का लोकार्पण भी किया। कार्यक्रम में विज्ञान भारती के निवर्तमान अध्यक्ष पद्मभूषण डॉ. विजय भटकर, अखिल भारतीय अध्यक्ष डॉ. शेखर मांडे, एकेटीयू के कुलपति प्रोफेसर आदित्य मिश्रा, आरएसएस के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर व देश भर से आए विज्ञान भारती के पदाधिकारी मौजूद थे।

बाबा बन्दा सिंह बहादुर जी का मनाया गया 306वां शहीदी दिवस

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। बाबा बन्दा सिंह बहादुर जी का 306वाँ शहीद दिवस ऐतिहासिक गुरूद्वारा श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरू सिंह सभा नाका हिन्डोला लखनऊ में बड़ी श्रद्धा एवं सत्कार के साथ मनाया गया। प्रातः का दीवान 6.00 बजे श्री सुखमनी साहिब के पाठ से आरम्भ हुआ जो 10.30 बजे तक चला हजूरी रागी जत्था भाई राजिन्दर सिंह जी नेः–

सूरा सो पहिचानिऐ जु लरै दीन के हेत। पुरजा–पुरजा कटि मरै कबहु न छाडै खेतु।।

शबद कीर्तन गायन कर समूह साध–संगत को निहाल किया। ज्ञानी सुखदेव सिंह जी ने बाबा बन्दा सिंह बहादुर जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सिख इतिहास की महान शख्शियत जिसको सिख जगत में सिखों का पहला बादशाह, खालसा राज के मुखिया, महान जरनैल निर्भय सूरमा, कुशल शासक, के नाम से याद किया जाता है। बाबा बन्दा सिंह बहादुर जी का जन्म 27 अक्टूबर 1670 को कश्मीर के जिला पुछँ के शहर रजौड़ी में हुआ था। आपके पिता जी का नाम रामदेव जी बचपन से ही शिकार खेलने की लग्न लग गई क्योंकि जंगली इलाके में शिकारी स्वभाव होना जरुरी है नही तो आप शिकार हो जाओगे। एक दिन आप से एक गर्भवती हिरनी का शिकार हो गया आंखों के सामने हिरनी और बच्चे ने दम तोड़ दिया आप का दिल टूट गिया आपने कमान तोड़ दी तीर फेंक दिये शिकारी वेषभूषा उतार दी और घर बाहर त्याग कर बैरागी बन गये। मैदानी इलाके का भ्रमण किया और जानकीदास साधु के चेले बन गये। इस साधु ने आप का नाम माधोदास रख दिया। बैरागियों के साथ अलग–अलग स्थानों की यात्रा के कुछ समय बाद आप का मिलाप गुरु

गोबिन्द सिंह जी से हुआ गुरु जी के एक सवाल पूछने पर माधोदास ने बड़े चाव एवं सत्कार से कहा हजूर मै तो आपका बन्दा (सेवक) हूँ गुरु जी ने उन्हें अमृतपान कराकर बन्दा सिंह बनाकर "बहादुर" का खिताब दिया और पंजाब भेजने से पहले मौजूदा हकूमत से टक्कर लेने से पहले पूर्ण रुप से तैयार कर लिया और उन्हे एक नगाड़ा ,झन्डा और अपने पास से तीर दिए बाबा बन्दा सिंह बहादुर ने पंजाब में मौजूदा हाक्मों को पराजित कर खालसा राज स्थापित किया सन 1710 ई0 को सरहंद पर हमला करके छोटे साहिबजादों के कातिलों का मौत के घाट उतार कर लगभग 6 साल तक पंजाब की धरती पर बाबा बन्दा सिंह बहादुर ने राज किया। सन् 1716 में दिल्ली के बादशाह ने भारी फौज भेज कर बाबा बन्दा सिंह बहादुर और उनके साथियों को गुरदास नंगल की कच्ची गढ़ी में 8 महीने के घेरे के बाद गिरफ्तार करके दिल्ली के लाकर उनके साथियों को यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया और बाबा बन्दा सिंह बहादुर के पुत्र का कलेजा निकाल कर उनके मुँह में उाला गया और उन्हें अनेक प्रकार की यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया। कार्यक्रम का संचालन सतपाल सिंह मीत ने किया। दीवान की समाप्ति के उपरान्त स0 राजेन्द्र सिंह बग्गा जी अध्यक्ष ऐतिहासिक गुरूद्वारा श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरू सिंह सभा नाका हिन्डोला लखनऊ जी ने शहीद बन्दा सिंह बहादुर सिंह जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये उपरान्त चाय का लंगर समूह संगत में वितरित किया गया।

लखनऊ में दिनदहाड़े युवक की गोली मारकर हत्या : दिनदहाड़े हुई वारदात से मचा हड़कंप

लखनऊ ब्यूरो : राजधानी लखनऊ के कैंट इलाके में बदमाशों ने दिनदहाड़े एक युवक को घर में घुस कर गोली मार दी। बदमाशों ने हत्या के पहले घर में मौजूद बच्चों व पत्नी को कमरे में बंद कर दिया और फिर युवक वीरेंद्र कुमार ठाकुर को गोली मार दी। प्रभारी निरीक्षक कैंट ने बताया कि वीरेंद्र कुमार ठाकुर (42) दिव्यांग है। उसकी दो पत्नियां हैं। जिसमें से एक घर छोड़कर जा चुकी है। वह अपनी दूसरी पत्नी व दो बच्चों के साथ कैंट स्थित घर में था तभी

आए बदमाशों ने उसकी पत्नी व बच्चों को कमरे में बंद किया और उसे गोली मार दी।

जिला स्तरीय बैंकिंग समन्वय समिति की बैठक संपन्न

जौनपुर सू.वि. : जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति सह जिला समन्वय समिति की समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की गई। जिलाधिकारी ने जनपद में मौजूद सभी बैंकों को जिले के विकास योजनाओं में सक्रिय सहभागिता के संबंध में विभिन्न दिशा निर्देश दिए। अग्रणी जिला प्रबंधक उमा शंकर के द्वारा बैंक के मार्च तिमाही यानी 31 मार्च 2022 तक की उपलब्धि पर विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान सभी बैंक के द्वारा मार्च महीने तक प्राप्त की गई उपलब्धियों की बारी–बारी से समीक्षा की गई। समीक्षा के क्रम में यह तथ्य सामने आया कि मार्च तिमाही में जिले की साखजमा अनुपात निर्धारित मानक से कम पाई गई, इस पर जिलाधिकारी ने सभी बैंकों के जिला समन्वयकों को जिले में साख–जमा अनुपात को बढ़ाने के लिए निर्देशित किया है और बेहतर उपलब्धि प्राप्त करने के निर्देश दिए। जिले की उपलब्धि प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना में गत वर्ष से अच्छी रही है। साथ में पिछले वर्ष के तुलना में जिले की वार्षिक साख योजना में उपलब्धि भी अच्छी रही है पर जिन बैंकों द्वारा साख–जमा अनुपात 40 प्रतिशत से कम हासिल हुई है, उनके ऊपर जिलाधिकारी ने काफी नाराजगी व्यक्त की, साथ ही जिन बैंकों द्वारा वार्षिक साख योजना की उपलब्धि 25 प्रतिशत से कम थी, जिलाधिकारी द्वारा उन्हें निर्देशित किया गया कि जिले में अपने प्रदर्शन में और सुधार करते हुए वार्षिक साख योजना, साख जमा अनुपात, सरकार प्रायोजित योजनाएं जैसे कि प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, स्टैंड अप इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, मुद्रा योजना के साथ प्रधानमंत्री के महत्वाकांक्षी योजनाओं जैसे सामाजिक सुरक्षा योजनाएं जिसके तहत पीएमएसबीवाई, पीएमजेजेबीवाई, जन धन योजना एवं अटल पेंशन योजना में जिले की उपलब्धि अच्छी हो। इसके लिए जिलाधिकारी ने प्रथम तिमाही से ही लक्ष्य के अनुरूप काम करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि सभी बैंकर अच्छे तरीके से काम करें, जिससे जिले की उपलब्धि बढ़ सके। जिलाधिकारी द्वारा यूनियन ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (RSETI) द्वारा किए

गए ट्रेनिंग प्रोग्राम की भी समीक्षा की गई। RSETI द्वारा लक्ष्य को हासिल कर लिया गया है। जिले में बेहतर तरीके से काम को करने के लिए सभी बैंक शाखाओं को केसीसी वितरण को और बढ़ाने के साथ साथ प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना एवं पशुपालन तथा मत्स्य संबंधी केसीसी लोन करने को भी अधिक से अधिक स्वीकृति एवं वितरीत करने हेतु निर्देशित किया गया। साथ ही सभी जिला समन्वयकों को अपने शाखा की उपलब्धि को तिमाहीवार प्रगति रिपोर्ट के साथ समीक्षा करने और समय पर अग्रणी जिला प्रबंधक कार्यालय को डाटा उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने बैंकरों को साख–जमा अनुपात एव वार्षिक ऋण योजना में और तेजी लाने का भी निर्देश दिया साथ ही सभी बैंकों को वित्तीय वर्ष 2022–23 के वार्षिक ऋण योजना में लक्ष्य के अनुरुप प्रगति करने एवं ऋण जमा अनुपात को 40 प्रतिशत तक लाने की कार्यनीति बनाने का निर्देश दिया।जिलाधिकारी ने मत्स्य विभाग, उद्योग विभाग एवं पशुपालन विभाग को उचित कार्रवाई करने का दिशा निर्देश दिया एवं लंबित ऋण संबंधी आवेदनों को जल्द से जल्द निपटारा करने का भी आदेश दिया साथ ही अस्वीकृत मामलों में कारण सहित प्रतिवेदन जिलाधिकारी को देने का निर्देश दिया गया। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी भू0 एवं राजस्व रजनीश राय, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व रामप्रकाश, अग्रणी जिला प्रबंधक उमा शंकर के अलावा, एलडीओ आरबीआई प्रशांत कुमार, वित्तीय साक्षरता परामर्शदाता कमलेश यादव, RSETI प्रतिनिधि अभिषेक कुमार, सभी बैंकों के जिला समन्वयक सहित सभी संबंधित जिला स्तरीय पदाधिकारी यथा जिला पशुपालन पदाधिकारी, जिला कृषि पदाधिकारी, जिला मत्स्य पालन पदाधिकारी, प्रबंधक जिला उद्योग केंद्र सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

हर घर तिरंगा कार्यक्रम के संबंध में जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में बैठक संपन्न

जौनपुर सू.वि. : आजादी अमृत महोत्सव के अन्तर्गत हर घर तिरंगा कार्यक्रम के संबंध में जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक संपन्न हुई। बैठक में जिला विकास अधिकारी बीबी सिंह ने अवगत कराया कि स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम देश भर में गरिमामय रूप से मनाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक भारतीय को अपने घर एवं प्रतिष्ठानों पर झण्डा फहराने के लिए प्रेरित करना है। जिलाधिकारी ने कहा कि प्रत्येक नागरिक के मन में राष्ट्रप्रेम की भावना को जाग्रत करते हुए स्वतंत्रता के प्रतीकों के प्रति सम्मान का भाव उजागर करना है। जनपद में हर घर तिरंगा कार्यक्रम को सफल बनाये जाने हेतु ''हर घर तिरंगा कार्यक्रम प्रत्येक सरकारी अधिकारी/कर्मचारी, शिक्षकगण, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, स्वयं सहायता समूहों, विभिन्न नागरिक संगठनों आदि के सहयोग से क्रियान्वित किया जाय। वाणिज्यिक एवं व्यावसायिक समूहों, संगठनों को उनकी सहभागिता एवं तिरंगा झण्डा बनवाने के लिए सी०एस०आर० संसाधनों को उपलब्ध कराये जाने हेतु प्रेरित किया जाये। ग्राम पंचायत स्तर पर सम्बन्धित विभाग द्वारा जागरूकता सत्र का आयोजन करते हुए ग्राम प्रधानों को शत–प्रतिशत घरों, दुकानों, कार्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों तथा नलकूपों इत्यादि पर झण्डा फहराने हेतु प्रेरित किया जाये। जनपद के समस्त नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में झण्डा के वितरण/बिक्री हेतु केन्द्रों को चिन्हित कर जनपद की समस्त सरकारी राशन की दुकानों को झण्डा वितरण एवं बिक्री केन्द्र के रूप में प्रयोग किया जाये। झण्डों के निर्माण हेतु स्वयं सहायता समूहों को सम्मिलित करते हुए ''झण्डा निर्माण समूहों का गठन किया जाये। उन्होंने जिला विकास अधिकारी बी0बी0 सिंह को निर्देश दिया कि झण्डा निर्माण लक्ष्यों के अनुसार पर्याप्त संख्या में झण्डों का निर्माण सुनिश्चित कराया जाये। नगरीय एवं पंचायत स्तर पर लोगों को झण्डा क्रय करने एवं कार्यक्रम में सम्मिलित होने हेतु प्रेरित किया जाये। जनपद के समस्त सरकारी, सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों, शैक्षणिक संस्थानों, व्यावसायिक एवं वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों, गैर सरकारी संगठनों, रेस्टोरेन्ट, शॉपिंग काम्पलेक्स, टोल प्लाजा, पुलिस चौकी/थाना इत्यादि को इस कार्यक्रम में अनिवार्य रूप से झण्डा फहराये जाने हेतु निर्देशित किया जाये। बैनर, पम्पलेट, स्टैण्डी, होर्डिंग्स एवं अन्य उपर्युक्त माध्यमों से स्थानीय भाषा में कार्यक्रम का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाये। परिवहन निगम की समस्त बसों, निजी बसों, ट्रकों एवं अन्य सार्वजनिक परिवहन साधनों तथा सरकारी वाहनों में हर घर तिरंगा कार्यक्रम का संदेश स्टीकर अथवा अन्य माध्यम से लगाया जाये। जनपद के समस्त टोल प्लाजा, चेक प्वाइन्ट्स इत्यादि पर बैनर, स्टैण्डी आदि लगाया जाये। जिलाधिकारी ने जिला विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि जनपद स्तर से पंचायत स्तर तक विभिन्न स्तरों पर नोडल अधिकारीगण के साथ–साथ पर्यवेक्षकों की भी तैनाती प्रत्येक विकास खण्ड एवं ग्राम पंचायतों के स्तर कर ली जाय तथा विभिन्न स्तरों पर इसकी नियमित समीक्षा भी की जाये। जिला विद्यालय निरीक्षक एवं बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिया कि सभी प्राथमिक/माध्यमिक स्कूलों में ''पैरेन्ट–टीचर मीटिंग'' के माध्यम से कार्यक्रम के सम्बन्ध में भी सभी को जानकारी दी जाये।''हर घर तिरंगा'' कार्यक्रम के वृहद स्तर पर प्रचार–प्रसार के माध्यम से एवं सिनेमाघरों, मल्टीप्लेक्स, केबिल नेटवर्क, स्थानीय सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से फ्लायर, वीडियो अपील, रेडिया जिंगल आदि के द्वारा किया जाये। जनपद के समस्त सरकारी अधिकारी/कर्मचारियों, शिक्षकों, शिक्षामित्रों, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, आँगनबाड़ी कर्मियों, आशा बहुओं आदि को पूर्व निर्धारित लक्ष्य दिया जाये तथा उक्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासों की नियमित समीक्षा की जाये। उन्होंने अवगत कराया कि 15 जुलाई से 05 अगस्त 2022 के मध्य जनपद के समस्त घरों, दुकानों, कार्यालय, प्रतिष्ठानों, शैक्षणिक संस्थानों एवं अन्य सरकारी एवं गैर सरकारी परिसरों में झंडों की उपलब्धता निर्धारित रूप से सुनिश्चित करा ली जाए। जिलाधिकारी ने जिला विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि झण्डा तैयार करने में स्वयंसेवी संस्थानों का सहयोग लिया जाए और झण्डा तैयार करने हेतु दिए गए दिशा–निर्देश के अनुसार ही तैयार किया जाए। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी भू–राजस्व रजनीश राय, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट हिमान्शु नागपाल, जिला विकास अधिकारी बी0बी0 सिंह सहित जनपद स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

आवश्यक सूचना

आप सभी पाठक बन्धुओं से अनुरोध है कि आनलाइन समाचार पत्र पढ़नें और ई–पेपर का लाभ लेने हेतु हमारे निम्नांकित वेबसाइट एवं न्यूज पोर्टल - dku live चैनल पर सम्पर्क कर लाभ उठायें– उ0प्र0 के सभी जनपदों एवं तहसीलों से पत्रकार बननें के लिए सम्पर्क करें–

www.Deshkiupasana.com
www.Deshkiupasana.in
www.Deshkiupasana.org

–संपादक

अटल पुरूषार्थ ट्रस्ट हरदोई में करेगा अटल विश्व बंधुत्वेश्वरम मंदिर का निर्माण

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। सेतुबंध रामेश्वरम की तरह बनेगा अटल विश्व बंधुत्वेश्वरम मंदिर नर किन्नर मिलकर करेगे निर्माण। प्रत्येक ईट व पत्थर पर लिखा होगा श्री राम और बंधुत्व।चांदा महमदपुर उत्तर प्रदेश हरदोई मे हो रहा निर्माण कार्य। मंदिर मे भरत और अटल बिहारी बाजपेई पूर्व प्रधान मंत्री भारत को होगी मूर्ति ।अटल बिहारी बाजपेई के मानस पुत्र संजीव द्विवेदी के नेतृत्व मे होगा सम्पन्न इस मंदिर का शिलान्यास अयोध्या के संत और सेतबंध रामेश्वरम के संत करेगे भगवद्गीता और भारतीय संविधान के ऊपर हो भगवान कृष्ण की बंशी ,बंशी मे भगवा झंडा और तिरंगा होगा 169 सांसदो के अंकित होगे नाम ।संपूर्ण भारत का किन्नर समाज जलायेगा दीप तीन दीपक जलेगे एक किन्नर दूसरा दीपक भगवदगीता का और तीसरा राज धर्म देश की प्रतिभाये जलायेगी। अटल पुरूषार्थ ट्रस्ट द्वारा अटल विश्व बंधुत्वेश्वरम मंदिर का निर्माण होगा।

अनुपस्थित रहने पर सिरकोनी के तीन कर्मचारियों से स्पष्टीकरण मांगा

जौनपुर सू.वि. : मुख्य चिकित्साधिकारी (सीएमओ) डॉ लक्ष्मी सिंह ने शुक्रवार को सिरकोनी के नेहरू नगर स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान तीन कर्मचारी अनुपस्थित मिले जिनसे स्पष्टीकरण मांगने का निर्देश दिया। निरीक्षण के समय वार्ड

ब्वाय मनोज कुमार, वार्ड आया राखी तथा ब्लाक अकाउंट मैनेजर (बैम) अनुपस्थित मिले। सीएमओ ने इनसे स्पष्टीकरण मांगने का निर्देश दिया। कई शिकायतों मिलने पर बैम को चेतावनी दी। डिलीवरी रूम में अच्छी साफ–सफाई के लिए स्टाफ नर्स पर नाराजगी जताई। सीएमओ ने राष्ट्रीय कार्यक्रमों का शत–प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने का निर्देश दिया। उन्होंने आशा कार्यकर्ताओं का शत–प्रतिशत भुगतान करने को कहा जिसपर सीएचसी अधीक्षक अभिषेक भरद्वाज ने बताया कि बजट आ जाने से आशा कार्यकर्ताओं का भुगतान कर दिया गया है। सीएमओ ने जननी सुरक्षा योजना के लाभार्थी का भी शत–प्रतिशत भुगतान करने का निर्देश दिया।

जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में आईजीआरएस के संबंध में बैठक संपन्न

जौनपुर सू.वि. : जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में आईजीआरएस के संबंध में बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने समस्त अधिकारियों को निर्देशित किया कि आईजीआरएस की शिकायतों का निस्तारण के उपरांत शिकायतकर्ता से वार्ता अवश्य कर

ली जाये। उन्होंने कहा कि शिकायतों को डिफाल्टर की श्रेणी में न जाने दिया जाए। आईजीआरएस के निस्तारण के लिए समस्त अधिकारी स्वयं प्रतिदिन इसकी निगरानी करें और देखें कि आईजीआरएस पर किस प्रकार की शिकायतें प्राप्त हो रही हैं और उसका निस्तारण समय से और गुणवत्तापूर्ण करें। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी भू–राजस्व रजनीश राय, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व रामप्रकाश, नगर मजिस्ट्रेट अनिल अग्निहोत्री सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

facebook YouTube WhatsApp twitter Instagram

–सुविचार–

आत्मानुभूति की शक्ति मन की विनाशकारी आदतों को बदलनें का चमत्कार कर देती है।

–साभार ज्ञानामृत पत्रिका

सम्पादकीय

शिखर सम्मेलन की तस्वीरों से जाहिर होती है सदस्य देशों की करीबी

चीन ब्रिक्स का विस्तार करने का इच्छुक है और रूस उसकी इस पहल का समर्थन करता है। इस पर सैद्धांतिक सहमति बन गई है, पर इसमें लंबा वक्त लगेगा, क्योंकि इसके मानदंड तय नहीं किए गए हैं।

चीनी सरकार के विदेश मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट पर लगी तस्वीरों में नौवें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (2017) में सभी नेता हाथ पकड़कर मुस्कराते हुए, तो दसवें सम्मेलन (2018) में एक कतार में खड़े कैमरे की तरफ हाथ हिलाते हुए और 11वें एवं 12वें शिखर सम्मेलन में बस खड़े हुए दिख रहे हैं। 13वें शिखर सम्मेलन में शामिल पांचों नेताओं की आप बस तस्वीरें देख सकते हैं। 14वां शिखर सम्मेलन, जो इसी हफ्ते आभासी तरीके से संपन्न हुआ, में केवल चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग बैठे और बोलते हुए दिख रहे हैं।

शायद, यह सदस्य–राष्ट्रों की बीच की दूरियों को दर्शाता है। लेकिन ज्यादा संभावना है, कि यह मौजूदा और आने वाले चुनौतीपूर्ण समय को लेकर हरेक सदस्य का सतर्क दृष्टिकोण हो। यह इस बात पर निर्भर करता है कि कोई वैश्विक मामलों को किस तरह से देखता है। इस संगठन का मजाक उड़ाते हुए अक्सर कहा जाता है कि इसका कोई उद्देश्य नहीं, कोई एकता नहीं, कोई उपलब्धि नहीं है। लेकिन वर्ष 2009 में अपनी स्थापना के बाद से यह न केवल बचा हुआ है, बल्कि इसने उन लोगों के लिए एक मंच का काम किया है, जो अर्थशास्त्र और व्यापार, जलवायु परिवर्तन, खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षा और अन्य सहयोग के मामले में 'गैर–पश्चिमी' तरीके खोज रहे हैं।

बीजिंग में ब्रिक्स के चौदहवें सम्मेलन में यूक्रेन पर रूसी हमले के बाद पहली बार रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को मंच प्रदान किया गया। अपनी बात रखने के लिए उन्हें पहली बार मौका मिला, जो अब तक पश्चिम नियंत्रित कूटनीतिक एवं सामरिक बहस में दबा हुआ है। वास्तव में ब्रिक्स उन पांच देशों का मंच है, जिन्होंने यूक्रेन में रूस की कार्रवाई की निंदा करने से परहेज किया है और एकध्रुवीय दुनिया का विकल्प खोज और प्रदान कर रहे हैं। इनका मानना है कि दुनिया को इस संतुलन की जरूरत है।

ब्रिक्स भारत के लिए गैर–पश्चिमी देशों से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण मंच बनकर उभरा है। यह भारत की बहुपक्षीय नीति को बल देता है, जहां भारत अपने राष्ट्रीय हित के लिए प्रासंगिक सभी ताकतों से जुड़ता है। इस बार ब्रिक्स शिखर सम्मेलन बेहतर परिस्थितियों में हुआ। बेशक भारत पश्चिम के साथ है, क्योंकि यह अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया के साथ क्वाड का सक्रिय सदस्य है। लेकिन इसने संयुक्त राष्ट्र समेत अन्य मंचों से दूरी नहीं बनाई है, जहां इसे दबावों का सामना करना पड़ा है, और गंभीर आर्थिक प्रतिबंधों की धमकियां भी मिली हैं।

यही नहीं, इसने रूसी रक्षा उपकरणों को खरीदना जारी रखा है और रियायती दर पर रूसी तेल खरीदने का बीड़ा उठाया है। भारत के खिलाफ धमकियां अब तक कामयाब नहीं हो पाई हैं। विदेशमंत्री एस. जयशंकर ने पश्चिम से कहा, खासकर यूरोप से, कि इस तरह सोचना बंद कीजिए कि यूरोप की समस्या वैश्विक समस्या है और सबको इसका पालन करना चाहिए, विशेष रूप से उन देशों को, जिन्हें उसने अतीत में उपनिवेश बनाया और उनका शोषण किया।

उन्होंने पश्चिम के इस तर्क को खारिज कर दिया कि अगर चीन भारत पर हमला करता है, तो केवल पश्चिम ही मदद कर सकता है, खासकर यूक्रेन संकट के बाद पश्चिमी देश जिस तरह से एशिया को देखते हैं, उसमें इस दावे पर भरोसा नहीं किया जा सकता। पहली बात तो यह है कि चीन भारत पर हमला नहीं कर सकता और दूसरी बात यह कि अगर ऐसा होता है, तो भारत कूटनीतिक समर्थन के अलावा और किसी मदद की उम्मीद न तो करता है और न करेगा।

निस्संदेह, जयशंकर को राजनीतिक समर्थन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत के सुरक्षा प्रतिष्ठान से मिलता है, जिसे दुनिया ने पहचाना है। शिखर सम्मेलन में अपना मुख्य भाषण देते हुए प्रधानमंत्री मोदी हालांकि सतर्क थे, उन्होंने चतुराई से कोविड–19 पर बात की, न कि यूक्रेन पर। उन्होंने जोर देकर कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के गवर्नेंस पर पांचों ब्रिक्स देशों के विचार समान हैं। शिखर सम्मेलन की घोषणा पढ़ते वक्त आईएमएफ और अन्य वैश्विक वित्तीय संस्थानों से आह्वान किया गया कि वे कोटा प्रणाली के रूप में काम करें, जो सभी अर्थव्यवस्थाओं के लिए उचित है।

इसने विश्व समुदाय को एक स्पष्ट संदेश दिया। असल में क्वाड का हिस्सा होने के नाते भारत को मितभाषी रहने की जरूरत है। मोदी जानते हैं कि अगर उन्होंने बीजिंग से कोई सख्त संदेश दिया, तो उसका गलत असर हो सकता है। भारत न तो चीन को उकसाना चाहता था और न ही पश्चिम को, फिर भी उसने ब्रिक्स के मंच का इस्तेमाल यह बताने के लिए किया कि दुनिया को एक ऐसे विकल्प की जरूरत है, जो अलग–अलग दृष्टिकोण को मान्यता दे और जिस पर प्रभावी ढंग से कार्रवाई की जा सके।

चीन ब्रिक्स का विस्तार करने का इच्छुक है और रूस उसकी इस पहल का समर्थन करता है। इस पर सैद्धांतिक सहमति बन गई है, पर इसमें लंबा वक्त लगेगा, क्योंकि इसके मानदंड तय नहीं किए गए हैं। उभरती अर्थव्यवस्थाओं के मंच के रूप में जब यह अर्जेंटीना, मिस्र, इंडोनेशिया, कजाकिस्तान, नाइजीरिया, सऊदी अरब और मैक्सिको जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था का स्वागत करेगा, तो इससे एक संदेश जाएगा कि बहु–ध्रुवीयता की ओर बढ़ने वाला विश्व मानवजाति के लिए एक बेहतर स्थान होगा।

शिखर सम्मेलन ने वैश्विक व्यवस्था की तीन प्रमुख चिंताओं को छुआ–आसन्न वैश्विक आर्थिक संकट, यूक्रेन में चल रहे युद्ध के नुकसान और ब्रिक्स का विस्तार। इसने बहुपक्षीय व्यवस्था में सुधार, कृषि, तकनीकी, कोविड–19 महामारी का मुकाबला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार, स्वास्थ्य, पारंपरिक चिकित्सा, पर्यावरण, व्यावसायिक शिक्षा व प्रशिक्षण, और एमएसएमई जैसे मुद्दों पर ध्यान दिया।

सम्मेलन की घोषणा ने वैश्विक शासन और अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार बहुपक्षवाद को बढ़ावा देने तथा परस्पर सम्मान और मौलिक अधिकारों के लिए शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। यह 'आर्थिक निर्णय लेने और मानदंड–निर्धारण प्रक्रियाओं में उभरते बाजारों व विकासशील देशों की भागीदारी को व्यापक और मजबूत करने के लिए तत्पर है।' कुल मिलाकर कह सकते हैं कि यूक्रेन संकट, प्रतिबंधों की धमकी, जलवायु आपदा या वैश्विक मंदी की आशंका के बावजूद ब्रिक्स की ईंट की दीवारें नहीं दरकीं, बल्कि इसने अपनी सहनशक्ति का परिचय दिया है।

ये लेखक के अपनें विचार हैं।

'तुमने चेहरा नहीं दिखाया तो ट्रेन से कटकर मर जाऊंगा' : अनजान दोस्त की धमकियों से आहत छात्रा ने की खुदकुशी

बरेली ब्यूरो : बरेली में मोबाइल पर चौटिंग से शुरू हुई अनजान युवक से दोस्ती ने इज्जतनगर की रहने वाली छात्रा की जान ले ली। छात्रा अनजान दोस्त की धमकियों से इस कदर आहत हो गई कि उसने जहर खा लिया। दरअसल युवक वोडियो चौटिंग के दौरान छात्रा पर चेहरा दिखाने का दबाव बना रहा था। चेहरा न दिखाने पर ट्रेन से कटकर मर जाने की धमकी दे रहा था। अनजान दोस्त की इस धमकी के बाद छात्रा ने उसे करीब 40 बार कॉल की, लेकिन उसने फोन रिसीव नहीं किया। अनहोनी की आशंका से छात्रा घबरा गई और उसने जहर खा लिया। हालत बिगड़ने पर परिजन को जानकारी हुई तो वे उसे अस्पताल ले गए। जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। इज्जतनगर की एक कॉलोनी में रहने वाली 17 वर्षीय छात्रा की एक युवक से व्हाट्सएप पर चौटिंग होती थी। किशोरी की मौत के बाद जब परिजन ने उसका मोबाइल देखा तो उन्हें व्हाट्सएप पर चौटिंग के बारे में पता चला। हालांकि दोनों के बीच फोन पर भी बात होती थी लेकिन लड़की ने कभी अपना चेहरा लड़के को नहीं दिखाया था। लड़का लगातार छात्रा पर चेहरा दिखाने का दबाव बना रहा था। बात न मानने पर उसने ट्रेन से कटकर मरने की धमकी भी दी थी, लेकिन किशोरी ने उसकी बात नहीं मानी। परिजनों की तहरीर पर इज्जतनगर पुलिस ने आलोकनगर में रहने वाले आरोपी संचित अरोड़ा के खिलाफ किशोरी को आत्महत्या के लिए उकसाने की रिपोर्ट दर्ज कर ली है। परिजनों का कहना है कि संचित ने चौटिंग में यह धमकी भी दी थी कि 'अगर तुम्हें कुछ हुआ तो तुम्हारे घर वालों को मार दूंगा।'

रितिका ने अंतिम समय तक नहीं मानी थी हार : तस्वीरें बयां कर रहीं हत्या से पहले हुए संघर्ष की कहानी

आगरा ब्यूरो : ताजगंज के ओम श्री प्लेटिनम अपार्टमेंट की चौथी मंजिल से फेंक कर की गई रितिका की हत्या के मामले में आगरा पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। रितिका के पति और दो महिलाओं को गिरफ्तार किया गया है। वहीं फ्लैट नंबर 404 से फोरेंसिक एक्सपर्ट की टीम ने साक्ष्य भी जुटाए हैं। पुलिस के अनुसार मौके पर जिस तरह सामान बिखरा मिला, उससे प्रतीत होता है कि रितिका खुद को बचाने के लिए अंतिम समय तक संघर्ष करती रही। फोरेंसिक एक्सपर्ट की टीम ने मौके से बाल का गुच्छा भी बरामद किया है। ये टूटे हुए बाल किसके हैं, इसका अंदाजा तो जांच के बाद ही हो सकेगा, लेकिन माना ये जा रहा कि हाथापाई के दौरान ये बाल टूटे होंगे। ओम श्री प्लेटिनम अपार्टमेंट के फ्लैट नंबर 404 में फेसबुक दोस्त विपुल के साथ लिव इन में रह रही ब्लॉगर रितिका सिंह ने जान बचाने के लिए देर तक संघर्ष किया। विपुल ने बताया कि आकाश ने आते ही उससे मारपीट की। वह बचाने आया तो उसे आकाश और उसके साथियों ने हाथ बांधकर बाथरूम में बंद कर दिया। वह चीखने लगा। मगर, कोई नहीं आया। इस दौरान रितिका के हाथ बांध दिए। अपार्टमेंट के अन्य लोगों को जब तक पता चला, रितिका को चौथी मंजिल से फेंक दिया गया। पूरी तैयारी से आया था आकाश। पूछताछ में यह भी पता चला कि आकाश गौतम पूरी तैयारी से आया था। सुबह 10:36 बजे अपार्टमेंट के गेट पर पहले उसने अपने साथ की दोनों महिलाओं से एंट्री कराई, जिससे किसी को शक न हो। यह सीसीटीवी फुटेज में नजर आ रहा है। गार्ड मुन्ना ने टोका तो दो और लोगों के साथ आकाश आ गया, उसने महिला से ही एंट्री कराई। उन्होंने सुनीता नाम लिखते हुए फ्लैट नंबर 601 में जाने की बात लिखी, जबकि उन्हें 404 में जाना था। मोबाइल नंबर के आगे आकाश का नाम भी लिखा। पांचों अंदर चले गए। 15 से 20 मिनट में हुई पूरी घटना 15 से 20 मिनट बाद

ही अपार्टमेंट के पिछले हिस्से से गिरने की आवाज आई। लोगों के शोर मचाने पर गार्ड ने गेट बंद कर दिया। लाश पड़ी मिलने पर लोगों ने वहां से भागते आकाश और उसके साथ की महिलाओं को पकड़ लिया। वहीं दो अन्य साथियों का पता नहीं चला। लोग फ्लैट में पहुंचे तो विपुल बंद मिला। उसे खोलकर बाहर निकाला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घटनास्थल से साक्ष्य संकलन किया। फ्लैट में बिखरा था सामान, टूटे मिले बाल पुलिस ने फोरेंसिक एक्सपर्ट की टीम को मौके पर बुलाया। टीम ने फ्लैट में जांच की। फ्लैट में सामान बिखरा हुआ था। सेंडल पड़ी हुई थी। बाल का गुच्छा भी था। वहीं गमला गिरा पड़ा था। फोरेंसिक एक्सपर्ट ने बाल को कब्जे में लिया है। पुलिस यह जानकारी जुटा रही है कि आकाश और उसके साथ के लोग किस वाहन से आए थे। क्योंकि उन्होंने गेट से पैदल ही प्रवेश किया था। बाहर भी कोई वाहन आकर नहीं रुका।

एक किलोमीटर दूर तक सुनी गई बस और ट्रक की टक्कर की गूंज : चारों तरफ मची थी चीख पुकार

लखीमपुर खीरी ब्यूरो : पीलीभीत बस्ती हाईवे पर शुक्रवार को ट्रक और बस की हुई भिड़ंत में पांच लोगों की मौत के बाद क्षेत्र के लोग स्तब्ध हैं। प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि सड़क किनारे एक खराब डीसीएम न खड़ी होती तो हादसा न होता। उधर, हादसे में सिसैया निवासी यात्री जमाल अहमद की मौत के बाद परिवार में मातम पुर्सी का माहौल है, जबकि जमाल की घायल पत्नी रेशमा की हालत गंभीर बनी हुई है। जिसे लखनऊ रेफर किया गया है। शुक्रवार की दोपहर ईसानगर थाना क्षेत्र में ऊंचगांव के पास भरेटा गांव में पीलीभीत बस्ती मार्ग पर बस और ट्रक की टक्कर की गूंज से पूरा इलाका दहल गया। प्रत्यक्षदर्शी ग्रामीण बताते हैं कि टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि गूंज एक किलोमीटर तक सुनाई दी। बताया कि हाईवे पर सड़क किनारे एक डीसीएम खराब हालत में खड़ी थी। भूसी भरी ट्रक लखीमपुर की तरफ से आ रही थी तो बस धौरहरा से लखीमपुर को जा रही थी। बताते हैं कि बस और ट्रक चालक दोनों को जल्दी निकलने की कोशिश में थे। लिहाजा दोनों में आमने सामने की जोरदार टक्कर हो गई। घटनास्थल पर मौजूद लोगों ने बताया कि चूंकि डीसीएम सड़क किनारे खड़ी थी, इसी दौरान बस और ट्रक ने वहां से एक साथ निकलने की कोशिश की लेकिन दोनों की आपस में टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जबर्दस्त थी कि बस गोल गोल घूम गई और बस का मुंह वापस धौरहरा की ओर हो गया। वहीं ट्रक भी पास स्थित पुलिया पर चढ़ गया और उसका मुंह खेतों की तरफ हो गया। बताते हैं कि बस और ट्रक की टक्कर की गूंज व लोगों की चीख पुकार सुनकर ग्रामीण मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। हादसे का मंजर देख ग्रामीण दहल गए। बस चालक की मौके पर ही मौत हो चुकी थी, जबकि ट्रक चालक ट्रक के केबिन में फंसा हुआ था। किसी तरह ट्रक के केबिन का दरवाजा तोड़कर चालक को निकाला गया। उसे एंबुलेंस से खमरिया सीएचसी भेजा गया, लेकिन उसकी रास्ते में ही मौत हो

गई।दवा लेने लखीमपुर जा रहा था जमाल बस और ट्रक की टक्कर से सिसैया ग्राम सभा निवासी युवक जमाल की मौत के बाद उसके घर में मातम का माहौल है। हादसे के बाद जमाल की मौत की खब्बर पर घर वालों को भरोसा नहीं हो रहा है, जबकि उसकी पत्नी रेशमा की हालत गंभीर बनी हुई है। उसे लखनऊ रेफर किया गया है।धौरहरा कोतवाली क्षेत्र के ग्राम सिसैया निवासी छोट्टन खां 62 वर्ष दूसरे नंबर का पुत्र जमाल 35 वर्ष अपनी पत्नी रेशमा के साथ शुक्रवार को अपनी पत्नी की दवा लेने के लिये लखीमपुर जा रहा था लेकिन सिसैया से महज 10 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद वह हादसे का शिकार हो गया और उसकी जान चली गई जबकि पत्नी की हालत गंभीर बनी हुई है। खबर सुनने के बाद बुजुर्ग पिता को गहरा सदमा लगा है, जबकि उसके आठ बच्चों को भरोसा नहीं हो पा रहा है कि उन सबके सिर से पिता का साया उठ गया है। पिता छोट्टन खां ने बताया कि उनके तीन बेटे हैं, जिसमें जमाल दूसरे नंबर पर था। वह परिवार से अलग घर बनाकर रहता था। बेटे की मौत के बाद अब उन्हें चिंता सता रही है कि जमाल के आठ बच्चों का पालन पोषण कैसे होगा।बताया कि जमाल मजदूरी पेशा था और मजदूरी करके घर का खर्च चलाता था। जमाल के परिवार में उसके आठ बच्चे अकबाल 16 साल, अफजाल 14 साल, सहमीर 12 साल, सुहेब 10 साल, उमेर 08 साल, रबी 06 साल, महफूज चार साल और अजमल उम्र दो साल है। जमाल के आठों बेटों समेत पूरे परिवार का रोरोकर बुरा हाल है, वहीं उसके घर पर परिचितों की भीड़ जुट रही है।

एसएसडी पब्लिक स्कूल अलीनगर सुनहरा में याद की गई इमरजेंसी

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। अलीनगर सुनहरा, कृष्णा नगर, लखनऊ स्थित एस.एस डी पब्लिक स्कूल मैं आज 25 जून 1975 की इमरजेंसी वाली स्थिति को विद्यालय के प्रबंधक रामानंद सैनी, प्रधानाचार्य श्रीमती मंजू सैनी, शिक्षक डॉ अरुण कुमार भरारी, श्रीमती इला दुबे, श्री कैलाश शर्मा, आशुतोष उपाध्याय, तथा सर्वेश कुमार ने इमरजेंसी पर अपने अपने विचारों को व्यक्त किया। प्रबंधक तथा समाजसेवी रामानंद सैनी ने बताया कि आज के दिन 25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के निर्देश पर तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने देश में आपातकाल की घोषणा कर दी थी। इसका प्रमुख कारण था इंदिरा गांधी के रायबरेली वाले चुनाव को हाई कोर्ट के द्वारा रद्द किया जाना और उन पर 6 साल तक चुनाव न लड़ने का प्रतिबंध लगाया जाना। उसी समय गुजरात के कांग्रेसी नेता चिमन भाई पटेल भी विपक्ष के द्वारा चुनाव में पराजित हो गए। इन कारणों से बौखला करके प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने संविधान की धारा 352 का सहारा लेकर के देश में आपातकाल की घोषणा कर दी सयह एक असंवैधानिक कदम था सक्योंकि माननीय उच्च न्यायालय ने जब आप के चुनाव को रद्द कर दिया था तो फिर इस प्रकार का कदम उठाना अलोकतांत्रिक ही था। लेकिन यह स्थिति पूरे 21 माह तक पूरे देश में बनी रहे। 21 मार्च 1977 को एमरजैंसी समाप्त हुई तो इंदिरा गांधी ने आम चुनाव की घोषणा कर दी । परिणाम स्वरूप कांग्रेस बुरी तरीके से पराजित हुई और सत्ता से बाहर हो गई। इन 21 महीनों में इंदिरा गांधी ने जो कि तानाशाही देश में चला रही थी उन्होंने संविधान के द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों को समाप्त कर दिया था। जनता के पास कोई भी मूल अधिकार नहीं था और जो भी इनके खिलाफ प्रदर्शन करता था उसे वे जेल में डाल देती थी। या यूं कहें कि उन्होंने प्रदर्शन करने पर पूरी तरीके से रोक लगा दी थी। मीडिया

पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया था। जो भी खबरें छपती थी उन्हें सरकार द्वारा बनाए गए सेंसर बोर्ड से होकर के गुजरना पड़ता था । जितने भी बड़े बड़े नेता थे या यूं कहें इंदिरा गांधी के विरोधी थे। उनको गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया था। प्रधानाचार्य मंजू सैनी ने कहा कि यह आपातकाल भारत वासियों के लिए खासकर उनके लिए जो उस समय पैदा हो चुके थे और समझदार थे उनके द्वारा कभी नहीं भुलाया जा सकता है। यह तो जनता पार्टी की सरकार की देन है कि उसने ढाई साल में अपनी ऐसी व्यवस्था कर दी कि अब इस प्रकार का आपातकाल कभी भी नहीं लगाया जा सकता। डॉ अरुण कुमार ने इस आपातकाल को और आज की 25 तारीख को काला दिन घोषित करते हुए देश के लिए बड़ा दुर्भाग्य बताया। इस आपातकाल की जो सबसे बड़ी बात उभर कर के आई वह परिवारवाद तानाशाही थी। इंदिरा गांधी के समय में भी परिवारवाद हावी था और आज भी कुछ दलों में खासकर कांग्रेस और क्षेत्रीय दलों में परिवारवाद देखने को मिल रहा है। श्रीमती इला दुबे ने कहा के सौभाग्य की बात है कि हमारे भाजपा के वरिष्ठ नेता देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी और प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी इस परिवारवाद से बहुत दूर हैं। उन्होंने राजनीति में अपने परिवार के किसी भी सदस्य को न शामिल करके एक ऐसी राजनीति और लोकतंत्र की स्थापना की है। जो कबीले तारीफ है। मुझे आशा है कि है अन्य राजनीतिक दल भी उनके कदम का अनुसरण करेंगे।

बच्चे देश के भावी नागरिक हैं स्कूली शिक्षा के अलावा उन्हें अतिरिक्त ज्ञान देना चाहिए –जगदीश प्रसाद शुक्ल

हरदोई ब्यूरो अम्बरीष कुमार सक्सेना : पिहानी पब्लिक स्कूल में 01 जून से चल रहे समरकैंप–2022 के समापन सत्र को संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि भारतीय इण्टर कालेज के पूर्व प्रधानाचार्य जगदीश प्रसाद शुक्ल ने अपने संबोधन में समरकैंप की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कहा कि बच्चे देश के भावी नागरिक हैं, उन्हें स्कूली शिक्षा के साथ ही योग, जुम्बा डांस, कंप्यूटर, इंग्लिश, मैथ एवं क्राफ्ट की अतिरिक्त जानकारी होना जरूरी है। समरकैंप के माध्यम से बच्चों में भावी जीवन के विविध विषयों के बारे में किताबों के अतिरिक्त ज्ञान दिया जाता है। श्री शुक्ल ने बच्चों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि इतने कम समय में शिक्षकों ने काफी मेहनत की जिसका परिणाम इस प्रदर्शन में दिख रहा है। प्रबन्धक अवधेश रस्तोगी ने मुख्य अतिथि को पुष्पगुच्छ एवं स्मृति–चिन्ह भेंट किया। स्कूल के प्रिंसिपल अनिल कुमार ने मंचासीन अतिथियों को पुष्प गुच्छ भेंट किया। प्रिंसिपल श्री कुमार ने आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री शुक्ल ने समरकैंप में कड़ी मेहनत के लिए स्कूल

की शिक्षिकाओं रुचि रस्तोगी और नेहा द्विवेदी को स्मृति–चिन्ह भेंट किए। बच्चों द्वारा किए गए क्राफ्ट कार्य की प्रदर्शनी लगाई गई जिसका मुख्य अतिथि समेत आगंतुकों ने अवलोकन और सराहना की। समरकैंप में सम्मिलित हुए जयपुरिया स्कूल हरदोई के छात्र पारस वाजपेयी और सेंट जेम्स स्कूल हरदोई की छात्राओं प्रज्ञा कपूर तथा दीक्षा कपूर ने इस दौरान हासिल किए गए अनुभवों को व्यक्त करते हुए इसे सफल समरकैंप बताया।

घर में दो से ज्यादा कुत्ते नहीं पाल सकेंगे : श्वानों के साथ गायों का भी लाइसेंस शुल्क बढ़ाने की तैयारी में नगर निगम

लखनऊ ब्यूरो : पालतू जानवरों के शौकीन अब घर में दो श्वान ही पाल सकेंगे। इससे अधिक श्वान पालने के लिए लाइसेंस नहीं दिया जाएगा। वहीं, श्वान और गायों का लाइसेंस शुल्क बढ़ सकता है। इसका प्रस्ताव तैयार है, जिसे नगर निगम सदन की मंजूरी के बाद लागू किया जाएगा। वहीं, श्वान लाइसेंस डिटिजल करने की तैयारी है। इसमें श्वान के शरीर में माइक्रो चिप लगाई जाएगी। लाइसेंस जारी करने की प्रक्रिया ऑनलाइन भी करने की तैयारी है। नगर निगम अभी अलग–अलग तरह के श्वानों का लाइसेंस जारी करता है। बड़ी नस्ल के विदेशी (बड़े) श्वान का 500 व छोटी नस्ल के विदेशी (छोटा) श्वान का 300 और देसी श्वान का 200 रुपये सालाना शुल्क लिया जाता है। अब जो प्रस्ताव बना है, उसमें सभी तरह के श्वानों का लाइसेंस शुल्क 500 रुपये सालाना किया गया है। इसी तरह अब एक घर में दो श्वान पालने का ही लाइसेंस दिया जाएगा। इसे लेकर तर्क दिया गया है कि एक घर में अधिक श्वान होने से आसपास वालों को परेशानी होती है। माइक्रो चिप वाला होगा लाइसेंस जल्द ही नगर निगम भी विदेशों की तरह यहां भी श्वान के लिए माइक्रो चिप वाला डिजिटल लाइसेंस बनाएगा। इसमें चावल के दाने के बराबर चिप श्वान के शरीर में लगाई जाएगी। इसमें श्वान के साथ उसके मालिक का पूरा डाटा रहेगा। नगर निगम के पशु चिकित्सक अभिनव वर्मा ने बताया कि

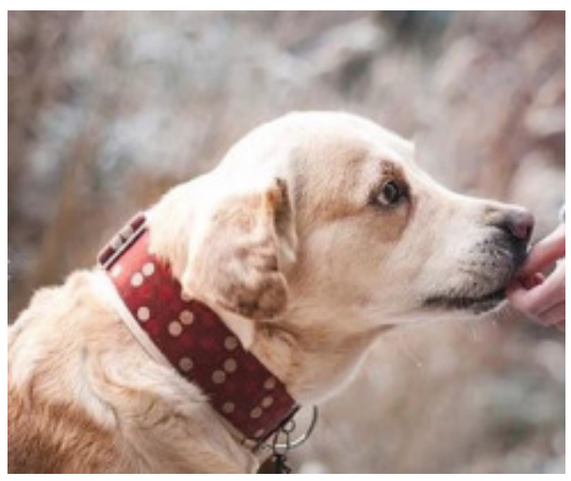

चिप रीडर मशीन से श्वान के लाइसेंस के बारे में आसानी से पूरी जानकारी मिल जाएगी। लाइसेंस जारी करने की प्रक्रिया को जल्द ऑनलाइन भी किया जाएगा। गाय का लाइसेंस शुल्क एक हजार करने की तैयारी एक व्यक्ति घर पर दो गाय पाल सकता है। इसके लिए नगर निगम लाइसेंस जारी करता है। अभी एक गाय का सालाना लाइसेंस शुल्क महज 31 रुपये, जिसे बढ़ाकर 1000 रुपये करने की तैयारी है। इसे लेकर प्रस्ताव तैयार किया गया है। लाइसेंस तभी जारी किया जाएगा जब आवेदक उसकी शर्तों का पूरा करेगा। वह बताएगा कि उसके पास गाय पालने के लिए पर्याप्त जगह है और वह उसे खुला नहीं छोड़ेगा और गंदगी नहीं बाहर फेंकेगा।

थाना बक्शा पुलिस द्वारा गैर इरादतन हत्या की वांछित अभियुक्ता सहित दो अभियुक्त गिरफ्तार

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जौनपुर श्री अजय कुमार साहनी के निर्देशन में वांछित/वारंटी अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण व क्षेत्राधिकारी सदर के पर्यवेक्षण में व थानाध्यक्ष बक्शा ओमनारायण सिंह के नेतृत्व में उ0नि0 विवेकानन्द सिंह , उ0नि0 मनोज कुमार सिंह मय हमराह हे0का0 बृजेश कुमार सिंह , म0का0 मांशी अग्रहरी द्वारा मु0अ0सं0 174/22 धारा 308/323/504 भा0द0वि0 से सम्बन्धित वाँछित अभियुक्त 1. योगेन्द्र कुमार पुत्र शिवराम निवासी शेखपुर थाना बक्सा ,जौनपुर 2. विद्यावती (काल्पनिक नाम)को ग्राम शेखपुर से आज दिनांक 24.06.2022 को समय करीब 06.30 बजे गिरफ्तार किया गया । अभियुक्तगण उपरोक्त का चालान मा0 न्यायालय किया जा रहा है । गिरफ्तार अभियुक्त 1. योगेन्द्र कुमार पुत्र शिवराम निवासी शेखपुर थाना बक्सा ,जौनपुर उम्र 35 वर्ष 2. विद्यावती (काल्पनिक नाम) गिरफ्तारी करने वाली टीम का विवरण 1. उ0नि0 विवेकानन्द सिंह थाना बक्शा जौनपुर। 2. उ0नि0 मनोज कुमार सिंह थाना बरसठी,जौनपुर। 3. हे0का0 बृजेश कुमार सिंह थाना बक्शा जौनपुर। 4. म0का0 मांशी अग्रहरी थाना बक्शा जौनपुर।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा 11 लाख ग्रामीणों को डिजिटल माध्यम से घरौनी प्रमाण–पत्र सौंपा गया

जौनपुर सू.वि. : मा0 मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा शनिवार को स्वामित्व योजना के तहत 11 लाख ग्रामीणों को डिजिटल माध्यम से उनके आवास का मालिकाना हक दिलाने वाला ग्रामीण आवासीय अभिलेख यानी घरौनी प्रमाण–पत्र सौंपा। इसी क्रम में जनपद के एनआईसी में घरौनी वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें एमएलसी बृजेश सिंह ''प्रिन्शू'', जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा एवं अपर जिलाधिकारी भू–राजस्व रजनीश राय की उपस्थिति में राम तीरथ, बिहारी, रामजनक, राम बहादुर, भीम, सुग्रीव, राजाराम, सोहनलाल, नंदू, छोटेलाल, हरिशंकर, अमरदेव, रविंद्र, राम चरित्र, सुरेंद्र यादव, राम बहाल, देवेंद्र यादव, रविंद्र यादव, आनंद, साहब लाल, शारदा प्रसाद, शिव शंकर, रामधारी, राजकुमारी, रामसहाय, रमेश चंद्र, प्रेम शंकर, प्रेम चंद्र, लाल चंद्र, सूरसती सहित कुल 45 लोगो को घरौनी का वितरण किया गया। इस अवसर पर एमएलसी बृजेश सिंह ''प्रिन्शू'' ने कहा कि सरकार की बहुत

अच्छी योजना है इसके तहत योजना के तहत ग्रामीण आवासीय अभिलेखों का निर्माण हो जाने पर जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में संपत्ति संबंधी विवाद काफी कम हो जाएंगे। जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रयासों से देश व प्रदेश में ड्रोन के माध्यम से ऐसा सफल कार्य हुआ है। उन्होंने कहा प्रदेश में पहली बार धरौनी अभिलेख ग्रामीण आबादी के भागीदारों को मिल रहे हैं। आज उनके मकानों की धरौनी मिली है और उन्हें घरों का मालिकाना हक प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट हिमान्शु नागपाल, तहसीलदार सदर पवन कुमार सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

डी0एम0 व सी0आर0ओ0 ने स्ट्रीट वेन्डरों में वितरित किया परिचय बोर्ड एवं प्रमाण पत्र

जौनपुर सू.वि. : राज्य नगरीय विकास अभिकरण (सूडा) लखनऊ के आदेश के अनुपालन में 25 जून 2022 को कार्यालय, जिला नगरीय विकास अभिकरण (डूडा) जौनपुर द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना–शहरी की 07वीं वर्षगॉठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित लाभार्थियों को जिलाधिकारी/अध्यक्ष डूडा जौनपुर मनीष कुमार वर्मा तथा मुख्य राजस्व अधिकारी/परियोजना निदेशक डूडा रजनीश राय द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना–शहरी के लाभार्थियों को अतिशीघ्र अपने आवास का निर्माण कार्य पूरा कराने हेतु अपील की गई। इसी वर्षगांठ कार्यक्रम में जिलाधिकारी एवं मुख्य राजस्व अधिकारी द्वारा पीएम स्वनिधि योजना के लाभार्थियों को स्ट्रीट वेन्डर परिचय बोर्ड एवं प्रमाण पत्र का वितरण किया गया। इस मौके पर अनिल कुमार वर्मा,

परियोजना अधिकारी, डूडा जौनपुर संतोष कुमार मिश्र, ई0ओ0 नगर पालिका परिषद जौनपुर, टी0एस0 ओ0पी0 यादव, डूडा के शहर मिशन प्रबन्धक जितेन्द्र सिंह, सी0ओ0 संदीप चौधरी, बृजनन्दन स्वरूप, एम0आई0एस0 विनय कुमार यादव, महेन्द्र अग्रहरि, दयाशंकर यादव, सूरज गुप्ता, विमलेश यादव, राहुल यादव, शिवपाल, गुलाम अब्बास, अजय बिन्द, अविनाश सिंह, आदि मौजूद रहे।

थाना बक्शा पुलिस द्वारा 03 शातिर चोर गिरफ्तार : कब्जे से चोरी की एक मोटरसाईकिल व एक अवैध चाकू बरामद

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : श्रीमान् वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, श्री अजय कुमार साहनी के अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में श्रीमान अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण व श्रीमान क्षेत्राधिकारी सदर के निर्देशन व पर्वेक्षण में एवं थानाध्यक्ष बक्शा ओमनारायण सिंह के नेतृत्व में गम्भीर वारदात को अंजाम देते समय मुखबिर की सूचना पर वाजाफ्ता चाकू सहित अभियुक्तगण 1.नाटे उर्फ अविनाश गौतम पुत्र कैलाश गौतम निवासी ग्राम धनियामऊ थाना बक्शा जौनपुर, 2.आशीष गौतम पुत्र प्यारेलाल निवासी मगरेसर थाना बक्शा जौनपुर, 3.दीनानाथ उर्फ दीनू पुत्र दुधनाथ गौतम निवासी कर्तिहां हिरासत पुलिस में लिया गया । पूछताछ के उपरान्त आवश्यक विधि मे कार्यवाही की जा रही है। गिरफ्तार अभियुक्तगण का विवरण– 1.नाटे उर्फ अविनाश गौतम पुत्र कैलाश गौतम निवासी ग्राम धनियामऊ थाना बक्शा जौनपुर, 2.आशीष गौतम पुत्र प्यारेलाल निवासी मगरेसर थाना बक्शा जौनपुर, 3.दीनानाथ उर्फ दीनू पुत्र दुधनाथ गौतम निवासी कर्तिहां

थाना बक्शा जौनपुर। बरामदगी का विवरण– 1. एक मो0सा0 पैसन नं0 न्च 62 च 0657। 2. एक अवैध चाकू। आपराधिक इतिहास– 1.मु0अ0सं0 20/2022 धारा 379/411 भा0द0वि0 थाना बक्सा जनपद जौनपुर। 2. मु0अ0सं0 203/2022 धारा 4/25 आर्म्स एक्ट थाना बक्सा जनपद जौनपुर। गिरफ्तारी व बरामदगी करने वाली टीम का विवरण– 1.उ0नि0 द्वारिकानाथ यादव,उ0नि0 गोपाल जी तिवारी,हे0का0 करमुल्ला खां ,हे0का0 अनिल सिंह,हे0का0 संतोष यादव ,हे0 शमीम खाँ व का0 शिवा सोनी थाना बक्सा,जौनपुर।

राष्ट्रपति चुनाव में भाजपा की उम्मीदवार का समर्थन करेंगी मायावती : विपक्ष पर बोला हमला

लखनऊ ब्यूरो : बहुजन समाज पार्टी की अध्यक्ष मायावती ने शनिवार को राजधानी लखनऊ में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान मायावती ने राष्ट्रपति चुनाव को लेकर विपक्ष की बैठक में बसपा को न बुलाए जाने पर हमला बोला। मायावती ने कहा कि हमें सरकार और विपक्ष ने अलग–थलग रखा गया। राष्ट्रपति चुनाव में विपक्ष का षड़यंत्र देखने को मिला। हम यह साफ कर देना चाहते हैं कि हमारी पार्टी ने आदिवासी समाज को अपने मूवमेंट का खास हिस्सा मानते हुए द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति पद के लिए अपना समर्थन देने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि हमारा यह फैसला न तो भाजपा या एनडीए के समर्थन में है और न ही विपक्ष के खिलाफ। हम अपनी पार्टी और आंदोलन को ध्यान में रखते एक आदिवासी समाज की योग्य और कर्मठ महिला को देश की राष्ट्रपति बनाने के पक्ष में हैं।

थाना सरपतहाँ पुलिस ने 01 वारण्टी अभियुक्त को किया गिरफ्तार

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जौनपुर द्वारा जनपद में वांछित/वारंटी अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे सघन अभियान के क्रम में थाना सरपतहां पुलिस द्वारा आज दिनांक 24.06.2022 को वारण्टी अभियुक्त प्रदीप पुत्र रामलाल निवासी सुईथाकला थाना सरपतहाँ जनपद जौनपुर सम्बन्धित मु0नं0 835/14 धारा 504/506/427 भादवि थाना सरपतहाँ जनपद जौनपुर को गिरफ्तार कर मा0 न्यायालय जौनपुर के समक्ष भेजा गया। गिरफ्तार अभियुक्त 1. प्रदीप पुत्र रामलाल निवासी सुईथाकला थाना सरपतहाँ जनपद जौनपुर गिरफ्तारी टीम 1.उ0नि0 लालता प्रसाद थाना सरपतहां, जौनपुर। 2.हे0का0 अंगद सिंह थाना सरपतहां,जौनपुर।

जौनपुर की संस्कृति विविधता से भरी हुई है –इमैनुएल लेनैन

जौनपुर सू.वि. : भारत में फ्रांस के राजदूत इमैनुएल लेनैन ने आज जौनपुर में अटाला मस्जिद, बड़ी मस्जिद, लाल दरवाजा, शाही पुल का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि ''भारतीय इतिहास अद्भुत है, मैं यहां जौनपुर में आकर खुश हूं, मुझे लगता है कि यह एक सुंदर विरासत है। यहां की संस्कृति विविधता से भरी हुई है। फ्रांस के राजदूत इमैनुएल लेनैन

ने जौनपुर में बड़ी मस्जिद का अवलोकन करने के बाद बताये कि मैं यहां आकर बेहद प्रसन्न हूं। भारतीय इतिहास अद्भूत है। मुझे लगता है कि यहां पर एक सुंदर विरासत की रक्षा की जाती है। इस दौरान उन्होंने इमारतों पर की गई कलाकृतियों की अपने कैमरे से तस्वीरे ली और इमारतों पर की गई कलाकारी की प्रशंसा की और सरकारी स्कूलों के बच्चों, आम लोगो से भी मिले। शहर में प्राचीन इमरती की दुकान पर जाकर इमरती खाई और तारीफ की। इस अवसर पर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट हिमांशु नागपाल, अपर पुलिस अधीक्षक शहर डॉ0 संजय कुमार, क्षेत्राधिकारी जितेंद्र दुबे, जिला सूचना अधिकारी मनोकामना राय सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने किया डूडा का निरीक्षण : दिया आवश्यक निर्देश

जौनपुर सू.वि. : जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा द्वारा शनिवार को कार्यालय जिला नगरीय विकास अभिकरण (डूडा) जौनपुर का औचक निरीक्षण किया गया। जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान परियोजना अधिकारी डूडा

अनिल कुमार वर्मा से संचालित योजना के संदर्भ में आवश्यक जानकारी प्राप्त की तथा कार्यालय में पड़ी प्रधानमंत्री आवास योजना–शहरी तथ निर्माण कार्य की पत्रावलियों को व्यवस्थित रखवाने हेतु आवश्यक निर्देश दिया। जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने डूडा के कर्मचारियों से उनके द्वारा संपादित किये जा रहे कार्यो की जानकारी भी प्राप्त की। निरीक्षण के दौरान मुख्य राजस्व अधिकारी रजनीश राय, नगर पालिका परिषद जौनपुर के ई0ओ0 संतोष मिश्र, डूडा के शहर मिशन प्रबन्धक जितेन्द्र सिंह, सी0ओ0 संदीप चौधरी, एम0आई0एस0 विनय कुमार यादव, बृजनन्दन स्वरूप, महेन्द्र अग्रहरि, गुलाम अब्बास, अजय बिन्द, अविनाश सिंह, जेई दयाशंकर यादव, शिवपाल यादव, विमलेश यादव आदि मौजूद रहे।

थाना पवाँरा पुलिस द्वारा 24 घण्टे के अन्दर चोरी की घटना का किया गया खुलासा : एक शातिर चोर गिरफ्तार

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : श्रीमान् वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जौनपुर के निर्देशन में अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे विशेष अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के दिशा निर्देशन व क्षेत्राधिकारी मछलीशहर जौनपुर के पर्यवेक्षण मे दिनांक 25.

06.2022 को थानाध्यक्ष श्री रामसरीख गौतम मय हमराही कर्मचारीगण द्वारा मु0अ0स0 51/2022 धारा 457/380 भा0द0वि0 से सम्बन्धित चोरी की घटना को अन्दर 24 घण्टे में समय 09.30 बजे मय चोरी गये माल के साथ अभियुक्त शैलेश सरोज उर्फ टिंकू पुत्र फूलचन्द्र नि0 सरायं पवारा थाना पवारा जौनपुर उम्र 30 वर्ष को भगौती चौराहा से गिरफ्तार कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है । गिरफ्तार अभियुक्त – 1. शैलेश सरोज उर्फ टिंकू पुत्र फूलचन्द्र नि0 सरायं पवारा थाना पवारा जौनपुर। अपराधिक इतिहास – 1. मु0अ0स0 51/2022 धारा 457/380/411 भा0द0वि0 थाना पवारा जनपद जौनपुर। बरामदगी का विवरण– 1. एक करधनी सफेद धातू , पायल दो जोड़ा सफेद धातू , बिछिया 17 सफेद धातू , कड़ा दो जोड़ा सफेद धातू , ताबीज एक सफेद धातू , झुमका एक जोड़ा पीली धातू , कान का आयरन एक जोड़ा पीली धातू , दो लाकेट पीली धातू , एक मंगलसूत्र पीली धातू मय काली गुरिया। गिरफ्तार व बरामदगी करने वाली टीम–1. थानाध्यक्ष श्री रामसरीख गौतम थाना पवाँरा जनपद जौनपुर। 2. उ0नि0 श्री बालशंकर यादव थाना पवाँरा जनपद जौनपुर। 3. हे0का0 सर्वेश सिंह थाना पवाँरा जनपद जौनपुर। 4. हे0का0 सर्वेश विक्रम यादव थाना पवाँरा जनपद जौनपुर। 5. का0 रणविजय यादव थाना पवाँरा जनपद जौनपुर।

आपातकाल ने भारतीय लोकतंत्र की आत्मा की हत्या की थी –सौरभ मिश्र

हरदोई ब्यूरो अम्बरीष कुमार सक्सेना : 25 जून 1975 को लागू किए गए आपातकाल के विरोध में भाजपा देश भर में हर साल काला दिवस मनाती है। जिलापंचायत हरदोई के सभागार में लोकतंत्र के काला अध्याय आपातकाल के विरोध में आवाज उठाने वाले लोकतंत्र रक्षक सेनानियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष सौरभ मिश्रा नीरज ने कहा कि आपातकाल ने भारतीय लोकतंत्र की आत्मा की हत्या की थी। देश में मौजूद सभी नागरिकों के अधिकार छीन लिए गए थे. परिवारवादी कांग्रेस ने अधिनायकवाद की स्थापना की कोशिश की थी, जिसका इन लोकतंत्र प्रहरियो ने बिना डरे सामना किया और सरकार के फैसले के खिलाफ खड़े हुए. आज जो आजादी की हवा हम ले रहें है वोह इन्ही प्रहरियो की दें है। कार्यक्रम में लोकतंत्र प्रहरियो को सम्मानित करने के लिए आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल, सदर सांसद जय प्रकाश रावत, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रेमवती पी के वर्मा और क्षेत्रीय उपाध्यक्ष पी के वर्मा मंच पर उपस्थित थे. सम्मानित लोकतंत्र प्रहरियो को अंग वस्त्र देकर उनके स्मरानो को याद किया गया. लोकतंत्र प्रहरियो में विद्या राम वर्मा, डॉक्टर सुरेश अग्निहोत्री, विष्णु दयाल गुप्ता, राम प्रकाश गुप्ता गुड्डू और समरादित्य सिंह अव अन्य शामिल थे। आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल ने इस मौके पर कहा कि कांग्रेस सरकार के इस काले अध्याय को लोगों में जानकारी दी जायेगी. पार्टी का मानना है कि इस दिन लोकतंत्र की हत्या हुई थी। जहा मीडिया से उसके निष्पक्षता के अधिकार छीन लिए गए थे. कांग्रेस नहीं चाहती थी कि उसकए इस काले फैसले के विरुद्ध कोई लिखे या पढ़े. वही दूसरी तरफ राजनैतिक विरोधियो को जेल में बंद कर जनता की आवाज दबाई गयी. लोकतंत्र से 'लोक' हटा कर 'तानाशाही' लिख दिया गया। जिस आजादी के लिए

असंख्य देशभक्तों ने अपना सर्वस्व बलिदान दिया, अमानवीय यातनाएं झेली, उस आजादी को इंदिरा गांधी ने पिंजरे में कैद कर लिया। जिस संविधान की शपथ लेकर श्रीमती गांधी सिंघसनस्पद हुई थी, सिंहासन बचाए रखने के लिए उसी संविधान पर ताला लगा दिया था। सांसद जय प्रकाश रावत ने आपातकाल लागू होते ही आंतरिक सुरक्षा कानून यानि मीसा के तहत धड़ाधड़ गिरफ्तारियाँ हुईं और एक के बाद एक विपक्ष के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ नेताओं को ढूंढ–ढूंढ कर जेलों में ठूस दिया गया। जो जहाँ, जिस हालत में मिला, उसे जेल की सलाखों के पीछे डाल दिया गया। देश के आम व्यक्ति की तो हैसियत ही क्या थी जब नामी–गिरामी राजनेताओं को रातों रात गिरफ्तार कर जेलों में ठूस कर अमानवीय यातनायें दी गई। यह एक भयावह कालखंड था जिसको याद कर आज भी लोग सिहर उठते है। कार्यक्रम के संयोजक सुभाष पाण्डेय ने संचालन किया व कार्यकम्र के सह संयोजक विनोद राठौर जी मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से पूर्व अध्यक्ष रामऔतार शुक्ला जी,रामकिशोर गुप्ता गुड्डू जी, जिला उपाध्यक्ष राजेश अग्निहोत्री, जिला महामंत्री अजित सिंह बब्बन, जिला महामंत्री अनुराग मिश्रा, जिला महामंत्री ओम वर्मा, वीरेंद्र वाजपेई जी, सुनील शुक्ला जी, अविनाश पाण्डेय जी,अविनाश मिश्रा जी, जी सहित वरिष्ठ नेता गन व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

थाना सिकरारा पुलिस ने गैर इरादतन हत्या के प्रयास के मुकदमे से सम्बन्धित 04 वांछित अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जौनपुर, श्री अजय साहनी के द्वारा जनपद मे चलाये जा रहे अपराध एंव अपराधीयो के विरूद्ध सघन अभियान के क्रम मे व अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के कुशल निर्देशन मे व क्षेत्राधिकारी सदर के कुशल पर्वेक्षण में थाना सिकरारा पुलिस टीम मु0अ0सं0 163/22 धारा 147/148/308/323/324/504/506 भा0द0वि0 से सम्बन्धित अभियुक्तगण की गिरफ्तारी बरामदगी हेतु क्षेत्र में मामूर थी कि अम्बेडकर तिराहे ग्राम रामसहायपट्टी अम्बेडकर बाबा की मूर्ति के पास से थाना सिकरारा पुलिस टीम द्वारा चार अभियुक्तों को मुखबीर की सूचना पर दिनांक 25.06.2022 को समय करीब 04.40 बजे गिरफ्तार किया गया। मुकदमा उपरोक्त से सम्बन्धित अभियुक्तगण कही जाने की फिराक मे थे। गिरफ्तार अभियुक्तगण– 1.किशन गौतम उर्फ धीरेन्द्र प्रताप पुत्र S/O बच्चेलाल 2. युवराज पुत्र बच्चेलाल 3. जितेन्द्र पुत्र बच्चेलाल 4. बच्चेलाल S/O स्व0 राजाराम समस्त

निवासीगण रामसहायपट्टी थाना सिकरारा जनपद जौनपुर। आपराधिक इतिहास – 1.मु0अ0स0 163/22 धारा 147/148/308/323/ 324/504/506 भा0द0वि0 थाना सिकरारा जनपद जौनपुर। गिरफ्तारी करने वाली टीम के सदस्य – 1.उ0नि0 विवेक तिवारी, थानाध्यक्ष सिकरारा, जौनपुर। 2.उ0नि0 मो0 जियाउद्दीन खाँ ,हे0का0 संजय यादव,हे0का0 भोला सिंह, म0का0 सवीता रावत थाना सिकरारा जनपद जौनपुर।

स्वामित्व योजना के अंतर्गत जनपद की समस्त तहसीलों में ग्रामीणों को वितरित की गई घरौनी

शाहजहाँपुर ब्यूरो उमाकान्त श्रीवास्तव : स्वामित्व योजना के अन्तर्गत आज सम्पूर्ण प्रदेश के भू – स्वामियों को ग्रामीण आवासीय अभिलेख (घरौनी) का वितरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसके अंतर्गत आज लखनऊ में मुख्यमंत्री ने अपने हाँथो से लोगों को घरौनी वितरित किये । जिसका सजीव प्रसारण कलेक्ट्रेट स्थित वीसी कक्ष में देखा गया। इस मौके पर उपस्थित लाभार्थियों व अधिकारियों ने मुख्यमंत्री का सम्बोधन भी सुना। जनपद के कलेक्ट्रेट स्थित वीसी कक्ष में विधायक पुवायां चेतराम एवँ विधान परिषद् सदस्य शाहजहाँपुर / पीलीभीत डाक्टर सुधीर गुप्ता , जिलाध्यक्ष भाजपा एवं जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह ने 15 लोगों को घरौनी प्रमाण पत्र वितरित किया। जिसमें ग्राम सरैया प्रेमराज के अशोक , जगदीश , मुकेश , रामवीर , विटौली देवी तथा ग्राम गणेशपुर के राम सिंह , रामवीर , फूल चन्द्र , अमरसेन , चतुरी तथा ग्राम उमरहा के शाकिर खाँ , राम किशोर , चन्द्रपाल , मोहिसन वेग , नसीम वेग लाभार्थी थे। उक्त कार्यक्रम जनपद की सभी तहसीलों में भी आयोजित किया गया । जिनमें तहसील सदर में सात हजार घरौनी तैयार हुयी तथा इनमे से प्रतीकात्मक रूप से तहसील मुख्यालय पर 10 घरौनी , कलान तहसील के 09 गांव की 155 घरौनी , तहसील जलालाबाद के 06 गांव की 30 घरौनी इत्यादि वितरित की गयी। इस दौरान जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह ने कहा कि स्वामित्व योजना माननीय प्रधानमंत्री एवँ मुख्यमंत्री की दूरदर्शिता , संबेदनशीलता और हर एक गरीब के लिए उनके मन में जो भाव है उस भाव को मंन्जूरी प्रदान करने के उद्देश्य से यह योजना प्रारम्भ की गयी है। इस योजना के माध्यम से किसी व्यक्ति को घर के संबंध में

विवादों का सामना नही करना पड़ेगा। उन्होंने लोगों को बताया कि जिस प्रकार से खेतों का वैधानिक अभिलेख खतौनी है। उसी प्रकार घर का वैधानिक अभिलेख घरौनी होगा। इस प्रकार अब घर के स्वामित्व को लेकर विवाद नहीं होंगे तथा लोग पूरे हक के साथ कह सकेंगे कि यह हमारा घर है तथा उन्होने कहा कि इस स्वामित्व योजना के अन्तर्गत ग्रामीण आवासीय अभिलेख (घरौनी) का प्रमाण पत्र प्राप्त होने से बैंक लोन तथा व्यावसायिक रूप से भूमि व अपने घर का उपयोग कर सकते है यह पहली बार हुआ है कि गांव की पुश्तैनी जमीन व मकान का अभिलेख उसके स्वामी को प्रदान किया गया है।जिलाधिकारी उमेश प्रताप ने घरौनी प्राप्त करने वाले सभी लोगों को बधाई दी। स्वामित्व योजना के अंतर्गत राजस्व एवँ पंचायती राज विभाग के इस कार्य के संपादन में लगे सभी अधिकारियों , कर्मचारियों को भी बधाई दी। उन्होंने कहा कि जहां भी इस योजना के अंतर्गत कार्य शेष है वह ड्रोन सर्वे के माध्यम से शीघ्र इस कार्य को पूरा किया जाए। यह घर के संबंध में बहुत महत्वपूर्ण अभिलेख है । अब घर के स्वामित्व संबंधी विवाद नहीं हो सकेंगे। ज्ञात हो कि सर्वे का कार्य ड्रोन के माध्यम से हो रहा है। ड्रोन सर्वे के माध्यम से एक एक इंच जमीन को नापने का काम किया जा रहा है। इस आधार पर हर एक घर के बारे में सही जानकारी और उसको अभिलेखों में उसी रूप में दर्ज किया जा रहा है। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन राम सेवक द्विवेदी , उप जिलाधिकारी तहसील सदर सुश्री सुप्रिया गुप्ता सहित स्वामित्व योजना के लाभार्थी व लेखपाल मौजूद रहे।

जनपद अयोध्या में प्रशिक्षण बजट के बावजूद बिना प्रशिक्षण कराये कराया जा रहा है यू डायस फीडिंग का कार्य

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) जनपद अयोध्या में प्रशिक्षण बजट के बावजूद बिना प्रशिक्षण कराये कराया जा रहा है यू डायस फीडिंग का कार्य। संबंधित ज्ञापन उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ जनपद अध्यक्ष जिलाध्यक्ष डॉक्टर संजय सिंह की अध्यक्षता में शिक्षकों ने एडी बेसिक अयोध्या को सौंपा ज्ञापन। जिला अध्यक्ष डॉक्टर संजय सिंह ने बताया अयोध्या जनपद में यूडायस फीडिंग का कार्य तीव्र गति चल रहा है, यह कार्य शिक्षकों से ही कराया जा रहा है। प्रदेश स्तर से लगातार समीक्षा के बावजूद अयोध्या यू डायस में पिछड़ी स्थिति में है। सभी शिक्षकों से फीडिंग कार्य कराया तो जा रहा है परन्तु बिना फीडिंग प्रशिक्षण दिये हुये यूडायस फीडिंग का कार्य समझ से परे है। शासन की मंशा थी कि शिक्षकों को विधिवत प्रशिक्षण देकर यूडायस फीडिंग कराई जाये इस आशय से प्रति विद्यालय 200 रु बजट भी जारी कर दिया गया और जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अयोध्या ने 6 व 7 जून को मास्टर ट्रेनर हेतु प्रशिक्षण भी सम्पन्न करा दिया जिन्हें ब्लाक स्तर पर समस्त विद्यालयों को यूडायस फीडिंग हेतु प्रशिक्षित करना था ताकि त्रुटि रहित फीडिंग हो सके परन्तु खंड शिक्षा अधिकारी भ्रष्टाचार के चलते प्रशिक्षण में रुचि नही ले रहे है जिससे यूडायस फीडिंग मे त्रुटियों की भरमार है। शिक्षकों को त्रुटि सुधार के नाम पर संशोधन हेतु ब्लाक व जिले तक भागदौड व समस्या का सामना करना पडेगा। जिला बेसिक अधिकारी अयोध्या ने विधिवत् पत्र लिखकर सभी खंड शिक्षा अधिकारियों को प्रशिक्षण कराकर ही यूडायस फीडिंग कराने के बाबत पत्र भी लिखा है। शिक्षक नेता व जिलाध्यक्ष प्रा०शि०संघ अयोध्या संजय सिंह ने इस संदर्भ में ज्ञापन दिया है कि विधिवत् यूडायस प्रशिक्षण कराकर ही यूडायस फीडिंग का कार्य शिक्षकों से कराया जाये। इस मौके पर प्रेम वर्मा दंगल सिंह, विकास सिंह, भास्कर यादव, अवधेश यादव ब्लॉक अध्यक्ष रंजीत यादव, अलोकेश वर्मा, ब्लॉक अध्यक्षअशोक यादव अजय वर्मा, दुर्गेश यादव, जय हिंद प्रताप सिंह, प्रदीप मौर्य, सुरेश मौर्य ,डॉ मंनुजेश यादव, जिलाजीत वर्मा।

दबंग व्यक्ति ने एसडीएम के सामने ही दी पत्रकार को जान से मारने की धमकी, पत्रकार ने दी थाने में दबंगों के खिलाफ लिखित तहरीर

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) दबंग व्यक्ति ने एसडीएम के सामने ही दी पत्रकार को जान से मारने की धमकी पत्रकार ने दबंगों के खिलाफ लिखित थाने में दी तहरीर इसके बावजूद भी अभी तक दबंगों पर नहीं हुआ एफ आई आर, दर असल मामला जनपद अयोध्या के तहसील मिल्कीपुर अंतर्गत ग्राम पंचायत कहुआ का है जहा के निवासी नंद कुमार यादव पुत्र हरिश्चंद्र जो इलक्ट्रानिक मीडिया से थाना इनायतनगर से क्राइम रिपोर्टर है ने थाना इनायतनगर में तहरीर देते हुए बताया कि मेरे पूर्वजों द्वारा गाटा संख्या 368 पर सैकड़ों वर्ष पूर्व मकान बनाया गया था जिसको लेकर गांव के ही विपक्षी शिव बहादुर दुबे पुत्र शेर बहादुर दुबे द्वारा तहसील मिल्कीपुर में हमारा घर गिराने के लिए प्रार्थना पत्र दिया था शिकायत के आधार पर दिनांक 20/06/ 2022 को एसडीएम मिल्कीपुर दिग्विजय सिंह जांच के लिए जब मौके पर हमारे घर पहुंचे तो उन्ही के सामने विपक्षी शिव बहादुर दुबे,पंकज दुबे व रोहित जिनके उपर कई अपराधिक मामले दर्ज है उसने पत्रकार को भद्दी भद्दी गाली देते हुऐ जान से मरवाने को कहा जो कभी भी पत्रकार के उपर हमला कर सकता है पीडित पत्रकार ने थाना इनायतनगर मे दिनांक 21/06/2022 को प्रार्थना पत्र देकर कार्यवाही की मांग की लेकिन अभी तक कोई कार्यवाही पुलिस विभाग ने नही किया जिस बात को लेकर पत्रकारों मे रोष बडता ही जा रहा है बात चीत के दौरान थाना प्रभारी अमर जीत सिंह ने बताया की मामला हमारे संज्ञान मे आया है जल्द कार्यवाही की जायेगी।

रुदौली सर्किल मे क्षेत्राधिकारी डा. राजेश कुमार तिवारी का ट्रांसफर निरस्त करने की मॉग

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) रुदौली सर्किल के तीनों थाने रुदौली,पटरंगा,मवई मे आपराधिक घटनाएं लगातार बढती जा रही हैं जिन पर अंकुश लगा पाना तीनों थानों की पुलिस के लिए टेढी खीर साबित हो रही है अभी कुछ दिनों पूर्व नवीन सीओ डाक्टर राजेश तिवारी ने जब रुदौली सर्किल की कमान सम्हाली तो उनकी कार्यशैली बहुत ही प्रशंसनीय रही गरीब, कमजोर, असहाय,व्यक्ति को डाक्टर राजेश तिवारी के रुप मे एक उम्मीद की किरण दिखाई पडी थी की अब उसको न्याय आसानी से मिल जाएगा।दर दर की ठोकरें नही खानी पडेगी।राजेश तिवारी की काम करने की शैली से तीनों थाने की जनता बेफिक्र हो गयी थी की अब अपराधियों व उनको संरक्षण देने वालों की खैर नही है पर विभाग के जिम्मेदारों ने डाक्टर राजेश तिवारी का ट्रांसफर कर जनता की भावनाओं को कुचल कर रख दिया है न्याय पाने की जो उम्मीद थी व चकनाचूर हो गयी आज जब तीनों थानों की जनता को जब थानों से न्याय नही मिलता है तो वह सर्किल अधिकारी के पास आती है पर अधिकांश देखा गया है की उनको यहॉ से भी निराशा ही हाथ लगती रही है।थक हार कर जनता को जिले के कप्तान के पास भाग कर जाना पडा है तभी उनको कुछ न्याय मिल पाया है।आखिर ऐसा कौन सा दबाव य ऐसी क्या मजबूरी थी जिम्मेदारों की जो चंद दिनों पहले आए तेज तर्रार पुलिस क्षेत्राधिकारी डाक्टर राजेश तिवारी का ट्रांसफर करना पडा।खैर वजह कुछ भी हो रुदौली की जनता पुलिस विभाग के जिम्मेदारों के इस फैसले से काफी आहत है और पुलिस विभाग के उच्चस्थ पदों पर आसीन जिम्मेदारों से डाक्टर राजेश तिवारी के ट्रांसफर को निरस्त कर रुदौली मे पुनः स्थापित करने की मॉग कर रही है।

जिले की 7 पीएचसी व 10 सब सेंटर को मिला कायाकल्प अवार्ड : चौरे बाजार पीएचसी को मिला प्रथम स्थान

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) वित्तीय वर्ष 2021–22 में काया कल्प अवार्ड स्कीम के तहत जिले की सात हेल्थ वेलनेस सेंटर / पीएचसी व 10 उप स्वास्थ्य केंद्र को कायाकल्प अवार्ड मिला है। ब्लाक बीकापुर के चौरे बाजार पीएचसी को सबसे ज्यादा स्कोर 82.9 के साथ जिले में प्रथम स्थान पाने पर 2 लाख का पुरस्कार व अर्बन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र / हेल्थ वेलनेस सेंटर रेतिया को दूसरी बार अवार्ड प्राप्त करने पर 50 हजार की राशि प्रदान की गई । पुरस्कार में मिली राशि का इस्तेमाल स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर करने के लिए किया जाएगा। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ अजय राजा ने कायाकल्प अवार्ड प्राप्त करने वाली सभी इकइयो के प्रभारी एवं समस्त स्टाफ को उनके योगदान पर बधाई दी द्य उन्होंने बताया कि कायाकल्प अवार्ड स्कीम के अंतर्गत जिले की 7 हेल्थ वेलनेस सेंटर / पीएचसी , 10 सब सेंटर को कायाकल्प अवार्ड मिला है। अवार्ड धनराशि का 25 प्रशित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उत्साहवर्धन हेतु और शेष 75 प्रतिशत राशि चिकित्सालय के चिंहित गैप क्लोजर, सुदृढीकरण, साज–सज्जा ,रखरखाव, स्वच्छता व्यवस्था,एवं गुणवत्तापरक सेवाओं एवं मरीजों से सम्बंधित सुविधाओं को बढ़ाने में किया जायेगा। जिला सलाहकार क्वालिटी इंश्योरेंस कार्यक्रम अरविंद सिंह ने बताया कि ब्लाक बीकापुर के चौरे बाजार पीएससी सबसे ज्यादा स्कोर 82.9 के साथ प्रथम स्थान मिला हैं। हेल्थ वेलनेस सेंटर / सब सेंटर सरेठी पूरा को जनपद में पहली रैंकिंग हासिल हुई है इनको 1 लाख रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी अन्य हेल्थ वैलनेस सेंटर /पीएचसी को 50 हजार का पुरस्कार दिया गया द्य इसमे अंजना द्वितीय रनरअप को 50 हजार का पुरस्कार , तृतीय रनरअप सलारपुर(मसौधा) को 35 हजार का पुरस्कार दिया जायेगा, इसके अलावा हेल्थ वेलनेस सेंटर /सब सेंटरो चौरे चंदौली, मुमताज नगर ,(मसौधा), तहसीनपुर , आख्तियारपुर (ब्लाक रुदौली) ,पुरवा मेलठु ब्लाक हरिगगटनगंज , ननसा तारुण की हेल्थ वेलनेस सेंटर/ सब सेंटर को सांत्वना पुरस्कार के रूप में 25–25 हजार रुपये की धनराशि दी जाएगी। अरविन्द सिंह ने बताया कि कायाकल्प अवार्ड अस्पताल की आधारिक संरचना एवं वहाँ दी जाने वाली सुविधा की गुणवत्ता के आधार पर दिया जाता है । आधारिक संरचना के अंतर्गत पेय जल की उपलब्धता एवं इसकी गुणवत्ता, जैविक कचरा निस्तारण, औषधीय उद्यान, सीसी टीवी कैमरा, ओपीडी में टीवी की व्यवस्था इत्यादि शामिल हैं। इसके साथ ही सुविधा के अंतर्गत नवजात देखभाल की व्यवस्था, प्रसव पूर्व जॉच की व्यवस्था, स्वास्थ्य कर्मियों का व्यवहार, रजिस्टर का रखरखाव, परामर्श इत्यादि को प्रमुखता दी गयी जाती है।

ग्राम विकास अधिकारी एवं प्रधान की मिलीभगत से भ्रष्टाचार चरम पर : मुख्य विकास अधिकारी से की शिकायत

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) प्रदेश में योगी सरकार को बदनाम करने के लिए सरकारी कर्मचारियो की भ्रष्टाचारी की नीति रुकने का नाम नहीं ले रही है इसी क्रम में मिल्कीपुर विकासखंड के ग्राम विकास अधिकारी को कमीशन की मुंह मांगी रकम ना मिलने के कारण ग्राम विकास अधिकारी द्वारा इंडिया मार्का दो नल की रिपेयर का भुगतान 120000 दूसरे फार्म को दिए जाने का मामला प्रकाश में आया है वही फर्म के मालिक द्वारा भुगतान पाने के लिए मुख्य विकास अधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है मिली जानकारी के अनुसार ग्राम सभा मीठे गांव निवासी सुरेश गुप्ता ने मुख्य विकास अधिकारी अयोध्या को दिए गए शिकायती पत्र में कहा गया है कि पांच छह माह पूर्व ग्राम पंचायत अस्थाना में विभिन्न स्थानों पर इंडिया मारका दो नलका रिपेयरिंग का कार्य किया गया था जिसका फोटो वालों के जन ग्राम विकास अधिकारी एवं ग्राम प्रधान को उपलब्ध करा दिया गया था पर आज तक भुगतान 120000 का नहीं किया गया सुरेश गुप्ता ने शिकायती पत्र में लिखा है कि ग्राम विकास अधिकारी और ग्राम प्रधान ने मिलकर सुरेश गुप्ता द्वारा कराए गए कार्य का भुगतान दूसरे फर्म को दे दिया गया है जिसका बिल वाउचर साथ में लगा दिया गया है अब प्रश्न यह उठता है कि अगर ग्राम विकास अधिकारी को सुविधा शुल्क ना दी जाए तो काम करने वाला फॉर्म चलता रहे और दूसरे फार्म को भुगतान कर दिया जाए यह कहां का न्याय है।

घटिया निर्माण एवं कमीशन खोरी ने रेलवे स्टेशन सहित माल बुकिंग कार्यालय गोदाम मे भरा पानी

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) सदर रेलवे स्टेशन पर पहली बारिश में कुछ दिनों पूर्व माल बुकिंग घर के गोदाम कार्यालय की स्टील की चादरो की छत जगह जगह टूट गई है जिसके चलते पहली बारिश में ही चूने लगी। वर्षा का पानी छूने से बाहरी स्टेशनों से आने वाला माल और जाने वाला कीमती सामान भीगने का अन्देशा हो गया है जिससे काफी नुकसान हो सकता है। कुछ दिन पूर्व पूरे स्टेशन के सेड एवं कमरों की छतों पर लगी पुरानी एस्बेस्टस की सीमेंट की छत की चादर खराब मानकर बदल दी गई थी। असबेस्टस की सीमेंट की चादर को खराब मानकर रेलवे के ठेकेदारों ने बदलकर स्टील की नई चादर लगा दी वह और भी खराब निकली जगह जगह कट फट जाने के कारण हल्की बारिश में भरभरा का चूने लगी है इसकी शिकायत नाम ना छापने की शर्त पर माल बुकिंग कराने आये व्यापारियों और जनता ने की है सूत्रों की माने तो स्टेशन के कायाकल्प के नाम पर किए गए मरम्मत और निर्माण कार्यों में खर्च की गई बड़ी धनराशि में अधिकारियों ठेकेदारों की आपसी मिलीभगत से बड़ा खेल किया गया है और गुणवत्ता विहीन चादरे लाकर पूरी स्टेशन की छत पर लगा दी गई हैं जिससे बहुत कम समय में यह चादरे जगह–जगह कटपिट गई हैं और चू रही हैं जिससे हल्की बारिश में भी स्टेशन का बुरा हाल हो जाता है।

स्कूली वाहनों की फिटनेस न कराने वाले प्रबंधकों पर गिरेगी परिवहन विभाग की गाज : दर्ज करायेगी केस

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) बार–बार नोटिस के बाद भी स्कूली वाहनों की फिटनेस न कराने वालों को लेकर अब परिवहन विभाग सख्त हो गया है।जिसके चलते अब स्कूली वाहनो की फिटनेश न कराने वाले प्रबंधको पर परिवहन विभाग केस दर्ज करायेगी।इसके साथ ही साथ परिवहन विभाग ने चेतावनी दी है कि अब स्कूली वाहनों की फिटनेस न कराने वाले स्कूल प्रबंधकों पर एफआईआर दर्ज कराई जाएगी और मान्यता समाप्ति की भी अनुशंसा की जायेगी।इसी कड़ी में राहत के लिए विभाग की ओर से विशेष कैम्प भी लगाया जा रहा है।इस संबंध में सहायक सम्भागीय परिवहन आयुक्त आरपी सिंह ने शुक्रवार को बताया कि स्कूली वाहनों के फिटनेस कराने के लिए बार–बार निर्देश दिए गए।वर्तमान में भी लगभग 200 स्कूली बसों का फिटनेस नहीं कराया गया है।उन्होंने बताया कि फिटनेस समाप्त 251 स्कूली वाहनों का पंजीयन चिह्न 6 माह के लिए निलम्बित किया गया है।इस संबंध में जिला विद्यालय निरीक्षक व जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के जरिये भी स्कूलों को सूचित किया गया है।इसके बाद भी अभी तक प्रबंधक चेत नहीं रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह स्कूल प्रबन्धकों के उपेक्षा व बच्चों के जान–माल को लेकर गंभीरता न होना दर्शाता है।उन्होने बताया कि परिवहन मंत्री के आदेश के अनुपालन में यदि बिना फिटनेस के वाहन संचालित पाया जाता है तो ऐसे प्रबन्धकों के विरुद्ध प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराते हुए उनके स्कूल की मान्यता समाप्त के लिखा जायेगा। उन्होंने बताया कि इसलिए सम्भागीय परिवहन कार्यालय में 27 और 28 जून को विशेष कैम्प का आयोजन किया जा रहा है।जिसमें आनलाइन तारीख लेकर स्कूली वाहनों की फिटनेस करा सकते हैं।

मार्ग चौड़ीकरण के दौरान जिनके मकान टूटेंगे उन्हें मुआवजा और दुकान के बदले मिलेगी दुकान – डीएम

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) राम नगरी अयोध्या के सुग्रीव किला, हनुमानगढ़ी और सआदतगंज–नयाघाट रोड चौड़ीकरण को लेकर प्रशासनिक प्रक्रिया अब अंतिम चरण में है।इस संबंध में जिलाधिकारी नितीश कुमार ने शुक्रवार को स्थिति स्पष्ट कर दी है। उन्होंने बताया कि सुग्रीव किला रोड निर्माण की तैयारी फाइनल स्टेज में है तो सआदतगंज–नयाघाट रोड को लेकर 80 प्रतिशत लोगों की सहमति प्राप्त हो चुकी है।डीएम ने शुक्रवार को यहां बताया कि शासन के निर्देश पर तीन प्रमुख सड़कों का चौड़ीकरण होना है,जिसके तहत सुग्रीव किला रोड के भूमि ले ली गई है और मुआवजा दे दिया गया है। निर्माण की प्रक्रिया शुरू करा दी गई है। इसके अलावा हनुमानगढ़ी रोड के लिए भी 80 प्रतिशत जमीन समझौते के आधार पर खरीद ली गई है शेष के लिए प्रयास चल रहा है। उन्होंने बताया कि सआदतगंज से नयाघाट रोड चौड़ीकरण के लिए लगभग 80 प्रतिशत लोगों की सहमति आ गई है।उन्होंने बताया कि इस रोड के

चौड़ीकरण के तहत जितनी भी दुकानें, मकान आदि टूटेंगे उन्हें कितना मुआवजा दिया जायेगा इसे तय किया जाना है। उन्होंने बताया कि यदि इस रोड पर किसी की पूरी दुकान टूटती है तो प्रशासन उसे अलग से दुकानें आवंटन करेगा। विकास प्राधिकरण और नगर निगम द्वारा दुकानें बनवाई जा रहीं हैं। डीएम ने कहा कि सआदतगंज रोड चौड़ीकरण में जिसकी भी जमीन, दुकान व मकान आयेगा उन तक प्रशासन जायेगा और बात करेगा।

क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी अयोध्या द्वारा ''उ0प्र0 खेल विकास एवं प्रोत्साहन समिति मण्डल अयोध्या'' की बैठक सम्पन्न

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) मण्डलायुक्त नवदीप रिणवा व पुलिस महानिरीक्षक के0पी0 सिंह की अध्यक्षता में क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी अयोध्या द्वारा ''उ0प्र0 खेल विकास एवं प्रोत्साहन समिति मण्डल अयोध्या'' की बैठक आयुक्त सभागार में आयोजित की गयी। आयुक्त ने मण्डल के विभिन्न खेलो से सम्बन्धित निर्धन/गरीब उदीयमान खिलाड़ियों को चिन्हित कर उन्हे प्रोत्साहित करने के निर्देश दिये। उन्होंने स्टेडियम में आने वाले खिलाड़ियों एवं विभिन्न खेल मैदानों/बैडमिन्टन हाल आदि आरक्षण कराने वाले समूहो/संस्थाओं से खेल के दौरान खेल अवस्थापनओं एवं इमारत की क्षति या तोड़–फोड़ करने पर नुकसान का ऑकलन कराकर जुर्माना निर्धारित कर धनराशि को प्रोत्साहन समिति में जमा कराने हेतु विचार–विमर्श सहित खेलों को बढ़ावा देने के उद्देश्य विभिन्न विषयों पर चर्चा की गयी। बैठक में खेलों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रचलित खेल यथा बैडमिन्टन, कबड्डी, एथलेटिक्स, खो–खो तथा हैण्डबाल खेल की प्रतियोगिताए आयोजित कराये जाने के सम्बन्ध में निर्णय लिया गया। बैठक में संयुक्त विकास आयुक्त श्री अरविन्द चन्द जैन, अपर निदेशक चिकित्सा स्वास्थ्य, संयुक्त निदेशक शिक्षा, मण्डलीय सहायक शिक्षा निदेशक (बेसिक), उप निदेशक समाजकल्याण, उप निदेशक (पंचायत) सहित मण्डल स्तरीय विभिन्न अधिकारी उपस्थित रहे।

संचारी रोगों पर प्रभावी नियंत्रण के लिए अंतर्विभागीय समन्वय के साथ विशेष अभियान का नवीन चरण प्रारंभ हो रहा है–मण्डलायुक्त

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) जुलाई 2022 से संचारी रोगों पर प्रभावी नियंत्रण के लिए अंतर्विभागीय समन्वय के साथ विशेष अभियान का नवीन चरण प्रारंभ हो रहा है, अभियान को प्रभावी बनाना सामूहिक जिम्मेदारी है। प्रशासनीक प्रयास के साथ–साथ जनसहभागिता भी महत्वपूर्ण है। उक्त बातें मण्डलायुक्त ने कही वहीं डब्ल्यूएचओ, यूनिसेफ, पाथ जैसी संस्थाओं का सहयोग लिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, मेडिकल एजुकेशन, ग्राम्य विकास, नगर विकास, महिला बाल विकास, कृषि, बेसिक माध्यमिक शिक्षा द्वारा अंतर्विभागीय समन्वय के साथ स्वच्छता और स्वास्थ्य सुरक्षा का ठोस प्रयास किया जाए। सूकर बाड़ों को यथासंभव आबादी से दूर व्यवस्थापित किया जाए और कीटनाशक का छिड़काव किया जाता रहे। स्क्रबटाइफस से बचाव के लिए शहरों, गांवों में झाड़ियों की साफ–सफाई, कटाई करा ली जाए, यह झाड़ियां बीमारी का प्रसार करती हैं। आशा, संगिनी, आंगनबाड़ी के साथ–साथ ग्राम प्रधानों को भी प्रशिक्षण दिया जाए। रोगियों तथा लक्षणयुक्त व्यक्तियों की त्वरित जांच तथा आइसोलेशन की समुचित व्यवस्था की जाए। रोगियों के आवागमन के लिए एम्बुलेंस की पर्याप्त उपलब्धता रहे। एम्बुलेंस का रिस्पांस टाइम न्यूनतम रखा जाए। कम्युनिटी हेल्थ सर्विसेज को त्वरित आउटब्रेक रिस्पॉन्स के लिए प्रशिक्षण दिया जाए। त्वरित आउटब्रेक रिस्पॉन्स के लिए डिजीज सर्विलांस डेटा तंत्र का सुदृढ़ीकरण किया जाए। फ्रंट लाइन वर्कर्स द्वारा उपलब्ध कराई गई क्षय रोग लक्षण युक्त व्यक्तियों के उपचार की समुचित व्यवस्था कराई जाए। ग्रामीण क्षेत्रों ने आबादी के बीच वाले तालाबों को अपशिष्ट तथा प्रदूषण मुक्त रखने के नियोजित प्रयास किए जाएं।

ईदुज्जुहा (बकरीद) पर्व के अवसर पर शांति सुरक्षा एवं अन्य विभागीय व्यवस्था के सम्बन्ध में बैठक दो जुलाई को

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) जिलाधिकारी नितीश कुमार की अध्यक्षता में आगामी दिनांक 10/11 जुलाई 2022 को संभावित ईदुज्जुहा (बकरीद) पर्व के अवसर पर शांति, सुरक्षा एवं अन्य विभागीय व्यवस्था के सम्बन्ध में मुस्लिम सम्प्रदाय के धार्मिक एवं प्रबुद्ध नागरिकों तथा पुलिस व कार्यदायी विभाग के अधिकारियों के साथ दिनांक 02 जुलाई 2022 को सायं 04 बजे कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बैठक आहूत की गयी है। उक्त जानकारी अपर जिलाधिकारी नगर सलिल कुमर पटेल ने देते हुये सभी सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक सूचनाओं सहित, उक्त बैठक में निर्धारित समय से प्रतिभाग करने का आवाहन किया हैं।

डायट पर जिला स्तरीय समीक्षा बैठक सम्पन्न

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) डायट में वरिष्ठ प्रवक्ता लाल चन्द , जिला समन्वयक प्रशिक्षण सुनील कुमार श्रीवास्तव एवं सभी डायट मेंटर्स तथा सभी ए आर पी, एस आर जी व सभी खण्ड शिक्षा अधिकारी गण की उपस्थिति मे बैठक आयोजित की गई।जिसमें

विस्तार से गुणवत्ता संवर्द्धन एवं सहयोगात्मक पर्यवेक्षण के लक्ष्यों के विषय में जानकारी प्राप्त की गयी।इस मौके पर वरिष्ठ प्रवक्ता द्वारा एक एक करके सभी विकासखण्डों के ए आर पी से सहयोगात्मक पर्यवेक्षण के विषय में विस्तार से जानकारी ली गई। जिला समन्वयक प्रशिक्षण सुनील कुमार श्रीवास्तव ने सभी से शत प्रतिशत संकुल बैठक मे सक्रिय प्रतिभाग करने को आवश्यक बताया। वही इसी कड़ी में एस आर जी डॉ अम्बिकेश त्रिपाठी ने निपुण भारत मिशन के अंतर्गत सभी ए आर पी से आह्वान किया कि आप सभी मिलकर शिक्षकों के माध्यम से सभी बच्चों की भाषा और गणित की दक्षता हासिल करने में पूर्ण सहयोग करे।कक्षा 1 में संचालित हो रहे चहक कार्यक्रम के विषय मे मनीष रस्तोगी ने चर्चा की।वही अमित कुमार मिश्र ने दीक्षा पर संचालित प्रशिक्षण के विषय में विस्तार से बताया।अंत मे वरिष्ट प्रवक्ता लाल चन्द द्वारा सभी रिसोर्स पर्सन से अपने द्वारा किए गए माडल शिक्षण कार्य का वीडियो क्लिप बनाये जाने और उसे साझा करने की बात कही गई।सभी का आभार प्रकट करते हुए वरिष्ट प्रवक्ता द्वारा बैठक के समापन की घोषणा की गई।

रोजगार मेले का आयोजन तीस जून को

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) जिलाधिकारी नितीश कुमार ने बताया कि क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय, राजकीय आईटीआई एवं कौशल विकास मिशन अयोध्या के संयुक्त तत्वावधान में 30 जून 2022 को प्रातः 10 बजे से राजकीय आईटीआई परिसर अयोध्या में रोजगार मेले का आयोजन किया जा रहा है। इस रोजगार मेले में निजी क्षेत्र की विभिन्न प्रतिष्ठित कंपनियां भाग ले रही है तथा मेले में हाईस्कूल, स्नातकोत्तर एवं आईटीआई डिप्लोमा तथा बीटेक पास अभ्यर्थी जिनकी उम्र 18 से 40 वर्ष के बीच है भाग ले सकते हैं। इस रोजगार मेले में लगभग 4000 या इससे अधिक बेरोजगार अभ्यर्थियों के उपस्थित होने की संभावना है। रोजगार मेले के सफल आयोजन हेतु एवं कोविड–19 के दृष्टिगत सोशल डिस्टेंसिंग के अनुपालन कराने हेतु अधिकारियों की ड्यूटी रोजगार मेले के कार्य हेतु लगाई जा रही है। उप जिलाधिकारी सदर व क्षेत्राधिकारी नगर द्वारा रोजगार मेले के लिए आवश्यक सुरक्षा व कानून व्यवस्था बनाये रखे के लिए प्रभारी नामित किया गया है। इसी क्रम में संयुक्त निदेशक राजकीय आईटीआई द्वारा रोजगार मेले में आए अतिथियों का स्वागत एवं व्यवस्था व्यवस्था करना, उपायुक्त उद्योग द्वारा रोजगार मेले में स्थानीय उद्योगों को प्रतिभाग कराना, सहायक श्रमायुक्त द्वारा रोजगार मेले में आए बेरोजगार अभ्यर्थियों के कार्यस्थल पर पंजीयन की व्यवस्था करने, प्रधानाचार्य राजकीय आईटीआई द्वारा रोजगार मेले में आए कंपनियों के नियोजको को आवश्यक व्यवस्था एवं कर्मचारियों की ड्यूटी लगाने का, अपर नगर आयुक्त नगर निगम द्वारा रोजगार मेले में अभ्यार्थियों के लिए पेयजल की व्यवस्था व कमरों को सेनिटाइज कराने का, मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा रोजगार मेले में कोविड–19 के दृष्टिगत डाक्टरों की एक टीम की आयोजन स्थल पर ड्यूटी लाने का, जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा रोजगार मेले में जिले के इण्टरमीडियेट कालेजों एवं महाविद्यालयों के छात्रों को प्रतिभाग कराने एवं प्रधानाचार्य राजकीय पॉलीटेक्निक द्वारा डिप्लोमाधारी अभ्यार्थियों को प्रतिभाग कराने का प्रभारी नामित किया गया है।

ट्रांसपोर्टरों के गोदाम पर एसटीएफ टीम का छापा

लखनऊ ब्यूरो : राज्य कर विभाग की एसटीएफ इकाई ने शनिवार सुबह राजधानी लखनऊ के तीन ट्रांसपोर्टरों के गोदामों पर अलग–अलग छापेमारी करके बड़े पैमाने पर टैक्स चोरी का खुलासा किया है। जांच के दौरान सभी ट्रांसपोर्टरों के गोदाम में कई करोड़ रुपए कीमत का टैक्स चोरी का माल पकड़ा गया है। तीनों जगहों पर जांच चल रही है। देर रात तक यह पता चल सकेगा की कितने की जीएसटी चोरी पकड़ी गई है। जानकारी देते हुए एडिशनल कमिश्नर एसटीएफ अरविंद कुमार और एडिशनल कमिश्नर एसआईबी लखनऊ जोन भूपेंद्र शुक्ला ने संयुक्त रूप से बताया कि राज्यकर आयुक्त के निर्देश पर यह कार्रवाई की जा रही है। दोनों अधिकारियों ने बताया कि जिन जगहों पर छापामारी चल रही है उन जगहों की पिछले एक सप्ताह से रेकी की जा रही थी। मुखबिर से पता चला था की यह ट्रांसपोर्टर टैक्स चोरी का माल लखनऊ ला करके बाद में धीरे धीरे कारोबारियों को पहुंचाते है। इस चोरी का खुलासा करने के लिए सुबह सीधे पुलिस लाइन से फोर्स लेकर तीनों जगहों पर एक साथ कार्रवाई की गई। इसमें ऐशबाग की ट्रांसपोर्ट कंपनी कल्पतरु के गोदाम और ऐशबाग स्थित खटिया गोदाम एवं गाजियाबाद गोल्डन ट्रांसपोर्ट के गोदामों पर छापेमारी की गई। सभी गोदामों में भारी तादाद में परचून का माल पाया गया। गोल्डन ट्रांसपोर्ट कंपनी के गोदाम के सामने माल सहित एक ट्रक को भी कब्जे में लिया गया है।

सम्पादक मंडल
पं. लाल साहब उपाध्याय (सत्यवेदानन्द जी), बाबा शक्ति नाथ (ज्योतिषाचार्य)श्री विजय कुमार तिवारी, श्री दीपचन्द्र मौर्य (एडवोकेट), श्री सुभाष चन्द्र सेठ,श्री ऋषिकेश द्विवेदी, श्री शिवशंकर तिवारी
प्रमुख कार्यालय– हिन्दी साप्ताहिक " देश की उपासना"
पता–ई 3464,राजाजी पुरम्(निकट मिनी स्टेडियम) लखनऊ उ0प्र0
लखनऊ सम्पादक– श्री पी0सी0श्रीवास्तव मों0 9415545107

स्वात्वाधिकारी की ओर से में0 प्रभुदयाल प्रकाशन के लिए श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव पत्नी श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

सह सम्पादक
श्रीमती हेमा त्रिपाठी
मो0–7007415808,9628325542,9415034002

RNI संन्दर्भ संख्या – 24/234/2019/R-1
deshkiupasanadailynews@gmail.com

उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है,समाचार पत्र में प्रकाशित लेख/समाचारों से सम्पादक की सहमति अनिवार्य नही
समाचार–पत्र से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायलय होगा।